THE INSTITUTE FOR ADVANCED STUDIES OF WORLD RELIGIONS

FILM—STRIP NO. MBB—1971—56-65

BUDDHIST SANSKRIT MANUSCRIPTS

IASWR

MICROFILM PROJECT MBB

MBB - 1971 56
1. Film strip number

18
2. Source

SUGATĀVADĀNAM
3. Title

4. Additional titles, shortened forms of title, etc.

N.S. + 880 = A.D.
5. Year in which MS was copied (Nepali Samvat and Christian Era)

x
6. Name of Scribe

NEPĀLI PAPER
7. Material (Palm leaf, etc.)

ANCIENT NEWĀRĪ
8. Script

8 cm. x 28 cm.
9. Size

5
10. Lines to a page

81
11. Number of leaves in complete work

x
12. Missing leaves

x
13. Author and Date of composition (if given)

12
14. Number of Chapters

15. Remarks
However the story of Sugata is imaginary but some idiology of Vasubandhu is very which is mentioned here is very important. So on some idea of offering things is worthy to pay attention etc.

October 7, 1971.
Date photographed

IASWR

MICROFILM PROJECT MBB

CONTENTS

Chapter 1,	Nidāna parivarta	5 B 3
,, 2,	Nimantrana ,,	9 B 5
,, 3,	Dharma śravaṇa ,,	13 B 5
,, 4	Sadgati prārthanā ,,	19 A 4
,, 5,	Vihārādisthāpana ,,	32 A 2
,, 6,	Vijñāna ,,	36 A 4
,, 7,	Bhūprārthanā ,,	42 A 1
,, 8,	Nimantrāmādi pūrvapravēśa ,,	57 A 3
,, 9,	Rātryādisthajanayajñaṭīkā pūrva ,,	66 A 6
,, 10,	Pūjanakramapūrvanimittā	70 A 1
,, 11,	Bhojanādi phala ,,	76 B 1
,, 12,	Saṅghabhojyapārthanā ,,	81 B 5

অসহস্রকীঃ।জুহাতিথাদিলাঙ্গুঃ বহুলীঃযবিবালকীঃ॥কিন্নরঃ উত্তরিত্থ বহুকিন্নরকিকীঃ।জু
নকীবসবদ্রথ বহুতিঃযবিবালকীঃ॥গরুড়ঃ উত্তরিত্থ বহুগরুড়মণ্ডিকীঃ।জুথগ্রীঠগরাকস্তু হ
মকমণিমণ্ডিকা॥সিংহাসনমমুক্ষ্য যুক্তঃ স্থবিবরাসযন।যথস্থিতিগরাসন সমযনবরাসকিঃ॥
যুনঃযুবস্তুকমস্তিঃ সকলামানিকাশ্বিকঃ।লাকসংবর্ত্তীন্নাম সমাধিবিদ্যথসা॥যথবক্ষসমালাক্ষ
সমাথধর্মদেশনাযাকাযননিজমানন বিজনস্থিতবিগ্রহী।নাসিকাগ্রসমাযম হস্তশ্চাকিসমুজ্জলন
॥সুখাযাস্থিত্থ স্থিরদাধিবিত্থ কলকমাঝিতিকমুবাদিযক্তসংযঃ।সবাবকুসুমাযলযুস্থবর্ষ্ণুশ্চাব

ওঁনমঃশ্রীসর্ব্বজ্ঞবাধিসত্ত্বেভ্যঃ॥বিদ্যাধরিকনকাভাঃশ্রীসিংহমুনীন্দ্রঃ ১ যবিমিকসুবর্ণগিরিসুখমানাজনাথ
ঃ॥কুবলয়দলনীলকজ্জলশ্যামতনুঃ স্মরবিজিতবিকচেন্দুসর্ব্বলোকদিনেশঃ॥সার্দ্ধদ্বাদশভিক্ষুভিঃ
বাবমিতামকঃ॥কুলপ্রথিতবৈশালীকৃতঃ সর্ব্বজ্ঞনকাবিদঃ॥নিঃক্রান্তবাজনযক্তঃ কীর্ত্তিগ্রামক্রিয়াদিয
ঃ॥কুযথাজ্ঞনকাগিন্ত্য নবীকাগ্রযনন্দনঃ॥সুবনবসুনন্দাগ্য বন্ধুগ্রাবকঃ॥মহঃসুযবাধিসত্ত্ব
ধর্ম্মবজ্রবলিকঃ॥সিত্যত্রসুবেঃসার্দ্ধ মণীবাবসদস্রকঃ॥বিশ্বাদবপুত্রস্তু সদস্রমাযুনবা॥সার্দ্ধ
দবাধিযনব বন্ধুসূর্য্যাদিনাস্তথাবত্তিথিসদাবাজ বনকাযবিবাবকঃ॥সার্দ্ধদ্বাদশভিক্ষুভিঃ কাযিকী

প্রসন্নকীঃ।সুহৃদ্ভিঃ প্রাণিবাঙ্গদ্রঃ বন্ধুলীঃ যবিবালকঃ॥ঞ্জিন্নবৈঃ শুভর্তিশ্চ বন্ধুকিম্নবর্ণিকবীঃ।সু
নকীবসুবন্ধুশ্চ বন্ধুতিঃ যবিবালকঃ॥গবুতন্দ্রশুভর্তিশ্চ বন্ধুগবুতমণ্ডিকঃ।সুখশ্রীঃ গবাক্ষশ্চ ব
সুকমণিমণ্ডিকা॥সিংহসনসমুচ্চয় বৃত্তন্দুবিবসমযন্ত্র।বর্ষস্তি গবাক্ষন সমযনবকসুকঃ॥
যুনঃযুবক্তকস্তিঃ সকুশামানিকাঞ্চিকঃ।লাকসংদর্শনাম সমাধিবিদ্বথস॥যমদবঃসমালাক্ষ
সতাশ্চ ধর্মদর্শনাশ্চ কায়ননিজমানন বিচনস্তিকাবিগ্রহী।নাসিকাগমদায়ম লক্ষশ্রীসমুজ্জলন
।সুখাস্যাশিশ্চ স্ত্রিদশাধিবিশ্চ নক্তম্মবিত্তিকমুখবাদিযক্তসংযঃ।মন্দাবকুসুমাত্মলযুগ্মবর্ম শুদ্ধাব

ঽঁনমঃশ্রীমর্ব্বব্রহ্মাধিমল্লয়ঃ॥বিদ্যাবিকনকাত্রীশ্রীশ্রীসিদ্ধমুনীন্দ্রী ঽযবিমিকসুবর্ণীয়সাযমানাজনাঘ
ঃকুবলয়দলনত্রালকহীযকসত্রঃ স্মরুবাবিবিকস্তেসর্ব্বলোকদিকস্তঃ॥সার্দ্ধদ্বাদশাহিহিক্ষ্ণ শ্রীঃ
বাবমিদাসকঃ॥ক্রকপ্রযর্ব্বী হতঃ সর্ব্বস্তুস্তনকাবিদঃ॥নিঃক্রতীবাজনযকঃ কীঞ্চগ্রযক্তিবিদ্যি
ঃকুযথাস্তনকাণ্ডিস্থ নদীকাণ্ডযনন্দনঃ॥সুযনন্দমুনন্দাযঃ বন্ধীপ্রণাবকঃ গণঃ॥সুযর্ব্বাধিমল্লিক
ধর্ম্মবুক্তপ্রবর্ত্তকঃ॥মিত্রযত্রমুবেঃসার্দ্ধ মণীযাবসদপ্রকঃ॥বিগযাদবপূর্ব্বস্তু সদপ্রাপ্তনবাসার্দ্ধ
দ্বাধিযনব বন্দসূর্য্যাদিনাস্তথাবত্তিস্থিসদাবাজ বনকাযবিবাবকঃ॥সার্দ্ধদ্বাদশাহিহিক্ষ্ণ কাযিকা

স্থিতাঃ ধর্মস্য ধর্ম্মিয়কারি জন্মনি বন্ধনাঠানাং নৃপস্য যাবিষয়কারি ঘুষ্ট্রনবিনাশ্বরাঃ যাঠাকারিস্থি
স্থিত্বা যাঠাকাযাঠিকা গণাঠাঁ বাধিমবামদামলা যাগবাধাশ্চ যাগিনঠাডাকক্লাস্থয়কারি বড়াকক
লিনাজনাঠামত্তবলময়াস্থয়া স্তুত্বজয়কারিনঠাজুথা হুবাধিমলস্য মীত্রযস্য মদামনঠাবিকামজি
নসস্থবাঃ জগজ্জয়বিমাদিনী॥ নিমিত্তমিদমাশ্বর্য্যং কুর্য্যং কথাগমনতাবনর্কিকারবঁপূর্ণং কদেতশ্চ তবি
ষ্যাকারিষ্ক্রিয়িতুঁলর্থং সমর্থস্যাত্তবুদ্ধিমাননাবলম্বিয়বি পুষ্কর্য সমর্থসমৃদ্ধিমতীধীমতীধী
নাযস্থী মস্তুস্থাঠ্যমতাবিষ্টাবহুবুদ্ধমদ্দশামি। হুং পুষ্কর্য্যাঠিকাঠাকুমার রাজিনস্ত্র বহুযুথা

[illegible]

[illegible]

[illegible]

यथाधिकारं पूर्वेमासि बुद्धानां भगवतां सर्वविद्यानां मनसीकृत्य विनिश्चित्य सर्वे श्रीमदाम्रवनार्थं पृच्छयति
लोकानां महिमानं प्रविश्य अथासनात् समुत्थाय तेषां गणमध्ये प्रवक्तुमिच्छया
भगवान् भगवान् श्रीमदाम्रवनार्थं पृच्छति कादेतमुत्पन्नं यत्र यत्र कथा कर्मवर्तनीयं श्रावकसङ्घस्य सागरा॥ वस्तुकोत्थ
मित्यत्र सङ्घश्रीप्रसादेन गमित्यत्र तत्पूर्वदिनमवाद्धमरतेन तथा॥ बुद्धानां वाधिसत्वा श्रावकानां च यत्र
तिष्ठति प्रकाशिकायां मि कैनकथा गगनमाविका॥ अनुमवाप्य कीर्त्य यस्मिन्यथ कल्पकथा यदासीत्तेन
कालेन समयनाथ सत्तमा सुगतालोकविबुद्धा विद्यावरमर्यकथा तेन भगवानुदयाय यदि श्रद्धस्यैव वीर

वस्य धर्मैकिल्बिषसूदनं॥ सप्तवक्त्रकल्याणी समासमाक्षिणीरुवन। अथ श्रीगर्हमामन्त्र वाधिसत्वादयादधिः॥
यर्षदयाक्षमावाक्षी सर्वाकानमुवावसथ श्रीगर्हहिकवायदि संवर्तवमाकव॥ सम्यक्कं वाधिमन्त्रा सहिर्म
हात्मकनिर्वा बुद्धाविमलनाहं स्कथमकारविष्यति॥ ॐ निर्मलाय संबुद्धा निर्वाणं वायमंयथो। अथ कस्यदवीध
र्मे वाधिसत्वावक्त्रतः॥ अथ श्रीयकवकल्यव सामनीनिष्प्रकस्यन॥ कमाऽजिकस्यपूजाक्ष ववक्त्रस्यगिस्यकाः॥
समनिष्प्रमुवास्कस्य वाधिसत्वस्यवारुवन॥ सर्वकणासिनाक्षन ववक्त्रगधीमकामस्यक्कं वाधिसंबुद्धा प्राहवि
स्यद्धोदधीकर्मावश्विमकानाम दीयक्कं वाजिनारुवन। आस्कादवामनुष्याणां रुगवारुवकावगः॥ ॐ निर्व

सौत्रिकवीनशाकान् संपूजनीयान् गुरुं च विप्रान् संभावयामास विधिवद्वरैः प्रसन्नः समृद्ध्याथ कथाश्चिदंगान्।
अथ कारयामास वरं किंगनकाशिवानूनमादेस्तमस्वाल्पं उमादास्यवगाहिनी। लाभादिवाग्निर्ध्वनावीक्ष
नियावर्धकाय्यतामसंबाधं वहुद्यमनवसंकुलं। दयामयिकथांश्च्यां गुलायायविवाधिनी। समृद्धिमदर्शिव
का उपयुक्तकथावनी। अथ सर्वमहीपालाः वहवुर्ब्रह्मवादिनः। वहुवृक्षसहस्रं वहुवृक्षाश्च वायिकः। व
द्रसूर्यप्रदीपाश्च समाधिविदधेयवी। अकनिर्दिगनत्राम जमदानन्दवर्द्धनी। यद्वस्तूर्ध्वनिमित्तानि दक्षानि
विविधानि वा। विस्मयाविष्टविज्ञन कस्यैवमभयायुवा। समाधेः समुत्थाय संदिदंगजगद्गुरुः। वरयस्तमभा

ग वृषभ ग्रीविनाभिनः। सर्वाप्राणि यवतात्र दुःखानि विविधानि च॥ अस्माद्धर्मं मुनीन्द्रस्य श्रुत्वा श्रीकाकस्य
वाग्रामं ग्रहीत्वा यदनिव मुनीन्द्रं यदमि स्तुतं॥ ततः कथयामास दुःखार्थं यामास सत्वरं। भगवन्दमानस्य मित्र यत्ग्रा
वकाहमीहामस्त भगवन्धर्मं जन्मसंघानानां लोकदर्शसंलोकानां सर्वदुःखनसागरं॥ ग्राम्यसिद्धवाद्वा॥ शृणु
मित्र यवक्ष्यामि धर्मा ग्राम्यं मुनीनां निःशुद्धस्य समिद्धेला सर्वदुःखनवर्ग्गः॥ पूर्वविदेहदिशाता वासी जन्म
वकी पूर्वी। सकवलमयदिग्धः शाकावेः सकठिर्गुणा॥ सुकठिः यविवालिश्च सकठिः कालयकिठिः यायं
सदीर्घनस्तावं शाक्यगायजनर्युक्ता॥ अद्विस्तीकासुठिकाश्च दर्शनीयामनावमा। अनुत्तीतजनाकीर्ण्ण पूर्यमानाः

ज्ञयमेतत्य दृष्टं पूर्वनिमित्तिर्वा। मया गिरिशस्य गत्वा सर्वे सर्वा यावविशाधनी॥ भगवानधिकधर्मं दर्शयिष्यति सास्त्रं
सूत्रा कधर्मे यथार्थं सर्वबुद्धयविप्रदा॥ यद्भवनागगरुडासुरकिन्नरेन्द्रैः यश्चिंतीत्रिकमलाष्टकमलायकाक्ष
ष्टः यत्रावयक्तिसकलसुगतावदानं यत्रासनसमाधिमथत्रवसक्तिसंघैः॥ श्रुत्वा सुगतावदाननिदानयविवर्ते
नामप्रथमः॥ १ ॥ सुखावाव कृगन्नाथं आकाशिंतदयादधी समाधसदसाल्ये मैत्र्यं दमिगद्रियं॥ दुल्ल
भं प्राप्यमानुष्यं विमुक्तं गामि रुद्रं। रुवयावमिकयवः काथाहि रुवकायुनः॥ यमानुष्यं प्राप्य गिवं रुवाः
ष्टः यावत्रया स्तुलमम्रवाम्भो। यवाधिवीजमवायवक्ति विकामगेप्राप्यधिकं गुणाघैः॥ मानुष्ययुग्मकः

লক্ষমববাজ্যবাস্যায়ুর্বলং সর্ব্বং মানুষ্যবলমীক্ষদা॥যৌবনং গবীবস্থা বন্ধুস্বজনমৈত্রীকীর্ত্তযুলাস্তাদিভাবা
নাং নিলয়ীকৃতমববা॥অথবাজীবস্তবার্য্যং সত্যস্বপ্নমদীয়ক্ষিতঃ॥নিত্যবগগনাবাজা দক্ষিণমকাবন॥প্রত্যুষ
সমযস্বপ্নযথৈববথাস্তবযাসর্ব্ববিলসমাজালং জলকমিবকজমৌ॥সিংহাসনসমাসীনং সবাজসহস্যাবৃ
তীসধর্ম্মেন্দ্রগযকীর্ত্তবাধিমত্তজগদ্ভুবী॥মকাযবুদ্ধকনগহ্যবাধযত্তেন্দ্রনৈঃসিংহাকালমন্ত্রযঃবসা
লাকদিকীকবঃ॥গযনাসদসাক্ষয বিস্মযাত্তেন্দ্রবাবনঃ॥অথবিক্ষযবাবাজা বস্তবস্তবাবহা॥বিদ্রযঃ
সর্ব্বমত্তস্যা বাধিমত্তাস্তিধীধনঃ॥প্রশ্নাধিকার্থবিজ্ঞাব হ্যকাযুর্ব্বমদস্তুতঃ॥শ্রীমিত্তাসবাজস্তু বিদ্রধ্বজ

सुवासुवः॥ कस्यानामवरदवाय मित्रपुत्रमहीयदिः॥ गंगजाघाटायः॥ शुभ्रा लाकानीपुष्पवर्द्धनः॥ वनसानुशिला
वस्त्र नलिनच्छदबीवनः॥ गवविमलवस्त्रस्य कनकपीनावलंबवाः॥ कस्य पुष्पावलीनाम दवीकुरंगलावनाः
मक्षीमस्तविनाधिश्च स्वनकस्तविनिस्मृतः॥ कस्य दुःखवसुर्वारुह यत्र जानाकथिववारयवृताधृताश्रयत
शुभावर्द्धवकर्मा॥ विनिग्रहानुगदयाः प्रवृत्तिस्तयकायिनी। यविकक्कस्य तथासीः पितः प्रजाशिवप्रिया॥ दि
नादयकुशास्त्रकः शस्त्रकुदहास्तुंकस्य मुक्तिमिकस्य तलीकावमिवारुवः॥ नवंप्रजाःयावयकःशुभ्र
विकाविवासी लयनायकस्य पुष्पाग्रयापुष्पदकमुशीला रूपस्य कृतारुकयकंगस्य॥ प्रदर्शमधनीविठं युत्र

ধর্ম্মমিমলং সমাপ্তাদ্যদ্যযামিঃ ধর্ম্মস্য প্রত্যাজগতাবর্ত্তিঃ কিবলাকক্ষ্মীর্গাঙ্গাবিবকাবিহারঃ
রাজাবাঃ স্বনকস্মমাবর্ত্ত কামুবাবসর্ব্বদাহস্তজামী প্রবৃত্তীমান সংযুক্তকীর্ত্তিমণ্ডলঃ বিদ্যাবিক্রমসত্যা
সমবস্থুবর্ত্তিবুদ্ধানাবাধিসত্ত্বানাং মাক্রমাত্মীয়দ্যকঃ কত্র গত্বাজগদ্ধ্যা সংধর্ম্মপ্রবর্ত্তায়বাবাধিসত্ত্বদয়া
সংধু মামক্রযামিসত্ত্বা জ্যথযুজ্যসমগ্রঃ সংযুক্তমালীকুণ্ডলীবর্ত্তসমাবুবাদন স্তুতবঃ সবলবৃতঃ কর্ত্তঃ
সবাজানুমর্ত্তবিধায় ধর্ম্মানুগমার্গমিমঃ জগামামদত্ত্বাবধনিঃ স্বাবাঃ সার্ব্বমদামাত্য গত্তিস্মাবৈঃ
দীত্বাবানিবস্তুমী বস্তু গন্ধাতমানিবা স্তুত্রানিমণিবিত্রানি বস্ত্রানিবিবিধানিবা মালীকুণ্ডলগ্রস্ম কর্পূর

সম্পূজ্য যথাবিধি বিবাহমাস যথাযুক্তমাগ্রহাৎ॥ তাস্তাস্তথৈব জনাথাস্য জগত্তেবর্জগমাঃ। নৃপস্যসর্ব্ব
সাস্ত্রং নৃপুত্রঃ যাবনাগিনী॥ কৃত্বাতি লাকক মথ্যযবীয় জনানি দর্শবৃষদশয়ন্তী ভাস্কাথিনঃ ভবিমুখোঃস
মীযুঃ সদানিধিদীনধনাংশ্চ বাম॥ নিবস্য স্বপ্নাদিগণযজ্ঞযত্রীঃ সবিস্ময়াস্তুস্তিকলাবনত্রীঃ। পীত্যাবলক্ষ
গুলমণ্ডনাঠ্য ভবাবরাজাথসহাঁসবিজী॥ কন্যাধুজিযর্দ্দাবহ যত্রাধর্ম্মস্যমাস্যর্দ্ধাধর্ম্মঘাকযর্বথাস্তিব
স্তনবিবাজন্তা কক্ষাঃযর্ষদাবাস্ত্র বিস্ময়াস্তকমানসাঃ। ত্রস্তাস্তসর্জনাস্তথা কপ্রগ্রামুর্দ্দীযর্দ্দি॥ কক্ষ
ভুষ্ঠা নাথাধনঃ প্রাগসমঃসহাব ধর্ম্মীজগত্যাবগযবিকযবস্থী মুখস্যবাদা মৃতমাগদক্ষ লতঃক্ষুগ

धर्मो ऽर्थ्यं कथयन्ति नीतिकथः। भाक्तार्थिनामर्थभाजः स्तुतिनिन्दनार्थिनामपि॥ लोकमूर्खवैवशात्संसारादिसागरात्
वदिवत्प्रधर्मकः। विवर्तकदावग्नसंकटजनाः स्याय्यकदादनिकक्षिमाध्वगः॥ दिवंयन्तुगच्छन्तिमकुशाकिंहिंवि
दिंयमानःखलुनकद्वयः। यावाप्रियुग्यलमिदेवबाहुरं मयोऽस्तु कंकादिष्ठिवंप्रयास्यतिजाअयिवा॥ यायत्र
लेकवाला जनमूर्खविलोकयन्। वाजीवनाश्वकावार्यां कालार्यायकमेघः॥ कृतामनाःहिमस्त्वं मुनयादिवस
ऽषः। क्वाविक्रिवःनमूर्खस्य दिक्षूक्तकथाधनः॥ कंकुयनिवयामा रुवरुमीयमलमीवरंकयालमायाय दिव
वन्मनिवधानं॥ यक्तिवःनामायनिमिलभव स्वंवालिसाधमीमिमंसृजक्तिनसाधवाङ्गनधनाम्रुयाक्तिवृद्धिकार

[illegible]

[illegible]

[illegible]

लाकासंयालयत्रीयाद्वरीडिसमूर्ज्जलन॥निर्संशयस्यहृयाला मातासंस्वप्रदर्शयन॥हगवक्रमूवानस्य विस्म
कंगुरार्जिवादयावासारदीनदहमागिन्याकाशिनिजामनीवहवाधिश्रयाथस्वजनंजन॥कस्माद्दयामुया
वाय विद्यालाकविनादिनी॥संत्रमामिजगत्यव विद्यानिवयहानुगः॥यूनस्थमदरागा॥विद्युद्वीविवरुद्ध मि
थ्यामानवुमाकवालाहवाकारुवत्र वधवर्धनकारहा॥शवर्थसंमतायासी संसारहीनवनथामाजाथि
जिनयायानि त्रहवत्रोघाघाकः॥दर्शवलवाश्वरथनसंयुक्तसत्रुरावस्वजनंजनस्यानयाकिंकाध्वमे
नयनरूपियः हलादयंवृक्षमिवप्रकायवान॥यवस्कृत्यस्वयंधर्मंव्रजयंवत्रूकायथा॥कवावस्थयजानाम

यवमपि कृष्ण॥ यथा बालस्य पुष्पफलानि विनिव मतीवृद्धा जानयवा न बाधिया बलिप्रदानेन विबुधा कर्जनैः सद
बलेन मृयालनाथ कान॥ यामीद्रमाद्रामफलेविनाकि नविवर्जिस्तोद्वर्द्धिवीजा॥ कीर्ग्रामिदर्शकवमूद्रम्ब
धर्मनृयोवनवनदकीर्ति॥ वज्रजयश्रीन्नरुवन्नरुग्ना बलेयथायायुधिदुर्वीर्यासाद्दुरामीविविधास्त्रदक्षै
उमादनिद्रानविमानयग्ना॥ सयादयःयाकवशाकुलादर्यं यथाकृविस्मीकुनःत्रयकृतिदशकथवक्तियालि
काजनाधर्मार्थकामःक्तिर्यनक्तियथाव्रजक्तिवर्जाशुरुभवरूप गावानुगायवृषरुपवावीवृहकथवाद
वनियस्यलाका जलस्त्रहारीमत्तुजगाहाहं॥ कस्माद्वमयूवस्त्रय वमस्त्रमत्यथनृया वृहकथवावनीयस्य

ভগবানাহ॥ গৃহমেত্র লাকানাং যত্র ভবসীস্থর্ব্ব একাগ্রমানসা হৃদা সহ্যর্ম্মনৃপসম্ভবা॥ রাজা বাবাচ যদুর্ক্ত শ্রী
মদাসর্ব্ব রাজর্ষ্যত্র যমবাহ্য সর্ব্বসস্থলে ধর্ম্মং ভগবদ্ভবাত্র গাড়ুর্য্যত্র ভ্রাতমিচ্ছামি ত্বমুখাস্যাজনির্ম্মলা
বাক্কীয়ুষ্টহ মাত্রোপি গিরিজ কর্ম্মিবাদিকঃ॥ কাশ্চিমদাধমালাক বিগ্রহ্যাগীবহ্যগবান্ত্রপবিত্রাস্থাবিতাদু
ষ্টবী ত্রিল্যবাক্যাবিবালিগঃ॥ সর্ব্ব লোকগতঃকশ্চিহ্ লিলস্যাবাবিবা মুত্রাকনকর্ম্মবিবাকন যাদৃশ্যাভগব
স্কার্থ্যাকসর্ব্বকদিবাদীন্ত মুনীন্দ্রাম জসহর্ম্মা সর্ব্বিবানুত্রদ্ধরুলা ভবাস্থবিনিসম্বন্ধা॥ পুত্রাভগবান্মহীয়ালী
ত্রমিকদ্রিয়সহর্ম্মা বসবস্থজগদ্বস্থঃ স্বয়ংগর্ব্বদশীয়ন॥ মদাহাগিসত্বানাং যত্তদাবিবাবহ্যাবস্থুগা

১৫x

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

সুবা।বাঞ্ছাঙ্গস্থিতিলক্ষ্মীব সবাঞ্ছয়ক্ষবসুধা।বদতিলঙ্গসদাহার্গ সংগঙ্গধর্মবলবীমাকর্দনুযসাঙ্গিলি দিক
বীসত্ত্ববল্লহঃ।অথসাঙ্গলিমাবধ্য কুলত্রদক্ষিণঃক্ষয়ীনিবঘবীযহাবাগি প্রপশ্যাবাবকংগুবী।নবীঙ্গি
বিস্থমানস্য ভগবন্তুগ্রলঙ্গয়া।প্রযাথিনাঙ্গুবুদ্ধ গুরু স্বাকযামিনঃ।আকীর্ত্তুমাযদক্ষর্মা বর্মিলঙ্গ
ঙ্গনাঙ্গবান।দ্বাঘিলঙ্গিধ্বস্ত্র ভবাঘস্করঘঁপ্রবী।কাঙ্গিদঙ্গস্কিমনাথ ভবযাদপ্রগাদকঃ।ভগবন্বুদ্ধধর্মা
ঙ্গ বাঙ্গিসলানমাস্তুতা।নিমক্ষযাম্যদঁবুদ্ধ ধর্মসংঘামৃতত্রদঃ।অনুকম্যাপুবস্তুব মাঁবাঙ্গগন্তুমর্হসি।ঙ্গি
কাযবসুহিকায মাকাযযুঙ্গবৃদ্ধযা।সলানাবিঘ্ননাশায গম্ববকীকিবিঙ্গকি।কত্রাগলাজগন্নাথ ধর্মা

কটিবস্ত্রনাথানিনবপত্রানি ফলমূলানি কানিবা॥ যুষ্মাভিবিবিধাশ্চব জলজাস্থলজানিবা॥ দুরকঃসীদুর্দুর্বৈ
হস্তবাবিক্রমবলী॥ দাবাগ্নিদাবসংযুক্তং কিঙ্কিনীজালশোভনং॥ স্বচ্ছবুদ্ধ্যমযস্কন্ধং নানাবলসমাকুলং॥ সুনুলামা
নিলাঙ্গুলঃ কত্তিস্মমলঙ্কারং বহ্নবাগ্নিমিবজ্বালা॥ সমযস্কদিগস্কবী॥ জথকৈহস্তজামীগঃ স্তবিবঙ্গযত্র
ধনঃ॥ বিক্রমবিক্রমাস্যাদি সম্বলঃকীর্ত্তিমণ্ডলঃ॥ বহ্নসিংহাসনাসীন সদ্বর্গদ্যযাবধি॥ বহ্নবাগ্নিমিবাজাল
সদাজ্বলিমুনীশ্বরঃ॥ বাধিসাবিহ্যালে যাকযামাসলাবন॥ জুবাথাস্ত্রিকিনির্ব্বাণী স্ত্রিবনবরকাস্কবী॥ জুথ
বাবরাজানং বাধিসাসামদাধনী॥ বাবস্তিস্তমদাবাজং কাঞ্চথস্তমিদাগতাঃ॥ কথ্যযবাবমাত্রিয় স্তবস্তুকুশলী

ত্রবাঘাদিযুবঃসবগাবাধিসলাধিহৃযযা নুবাধহৃষঃশীলিনঃনিক্কিনাখিলগমাগি হাগাবিন্দুবিবানঘ
ঃ।ত্রাকযাত্রগবীকাব ক্রমগাথহৃযগমঃগন্ধবতীসুতিকাঞ্চ নানামববিনাদিকাঁ।যাবরসাযবহিবঃ
হ্যমানি নিসমমগুযবিকাগনত্রঃজিনামগাহৃযযুবঃসবগ যুবীবিবগাথবলযকার্ঁ।ত্তদক্ষিণকামা
নাথ বাজগাযুবমুতমীসংগ্রাকবাধিসলহ্ন হৃহযান্দকাবকঃ।কাকানৃযকৃযসুগন্ধিবাবিগা দবীসঃ
যাঘমগিদমগাগহাত্রগাদিগাযাগসুবকনামুদা নিম্নাগমাগযুযদগিনঃসদা।সুখানুবাধহৃযযুব
সুবন্ধুজিলত্রকঃস্বকাহ্যাগসযহাগা দিবাকগ্নিবিবাত্রবা।সুখাত্রযোবাঃযবিমুহৃদমী বিমণ্ডিগাযাদ

मृगत्रदर्थयाकदर्थनागकासीकि जवयादत्रमादकः॥ नवमूकथ हयाल प्रविवाहयसलर्मा साधुसाधिकिमेव
स्थ वाधिसलाजगद्धु॥ यनागकास्यक्रमनावथन रमवकरमित्रपूवयामि समागकासीकिमभकवाक्कं हिः
कायलाकद्वयमथदक्क॥ श्रुत्वाकदर्थमीम्य वाधिसलाजिनामजः॥ विदावविक्रमवश्य रवाजयर्षदामुवाः
॥ रुवनिविपूवलक्ष्मीः पूक्ष्मानानृपाधिः दिविस्तुविमजनस्कदेवमंधर्मदहिः॥ कुमुदगाजिनिरास्तुस्का
जमक्षुमसंस्कृ समसमनिरुर्यथः॥ श्रवयवृद्धधर्मी॥ ॥ श्रुकिमगकावदाननिमक्तुघयविवर्लनामदिवा
यः॥ ॥ श्रुथमगीर्घयविपूक्ष्मदर्थः॥ ॥ पूवमूलकाकीत्रगमयाबीमूगकामजस्य विवि

विकाः॥ ॥ ॥ विश्व जनेऽ मज्जिताभिधः॥ ॥ विंशमनमसमुच्चय निवेद्याथ मुनीश्वरौ तगवद्भमूदवाच लसूत्सादमनानृपः॥
निर्मोमनसमासीनः बद्धकायकृताञ्जलिः॥ जानविर्मंतु विस्मथा तेवामर्मसमाववह॥ यदि धर्मोमिमेनृणां मूढ
यतदिनिर्वा निर्वयस्तु धर्मवा यथावक्तुमर्हसि॥ अथमेवाधिमलोऽस्य मयर्मलस्य तथा धर्मजमादमा
र्थं मादयत्रिवधिर्दूयं॥ मंजयतादयामय धर्मसत्वर्दनृयाक्षयं हिमानिवयादि त्रिविधर्मजमंतृघ्नं॥ यत्र
नामदवाजन॥ यथास्यात्मनाहिर्द यावा स्वजनजनाविठ्नामतवत्स्य त्वधर्मजलिकाण्ठं॥ यादयांस
मयजाधी विकावामिहीमर्मा कायवा मानसाश्रागे यथामस्वजनजन॥ नजस्मामुक्तिवर्ष कलादयाक्षया

কমাদজালাঃ।বহুবুবিদাঃকিবঘাশ্চতীব্র বাস্তুধিকীলাকবিনাদকয়া॥সিদ্ধনাদ্বনাদাশ্চ হৃত্যেবিবমদঃ
শীত্রময়মকলাশ্বিপ্রা স্বাধিমত্বাথদিক্ষুবিগ॥ত্রাদাদগবলালাক ধর্মবক্রযবঠকঃ।ঠবাঘস্কবগ্রনীকা
মাক্ষদঠাবাদকঃ॥বকস্থবসুধাবস্থা নকঃসাবনবর্ত্তকাঃ।ববদুন্দুভযানদ্দু গস্থবমধুবস্ববাঃ॥স্বকীয়
সাগবাবিলা ত্রসমাবাঠিগক্ষিযন্নাবস্কাগিবস্যাঃ ত্রসাদাঠবগাদিগাঃ।বজ্রসূর্য্যসমীন্দুয্যা গাবদী ৭০
ববিবজ্রতঃ।সমাযযুঃসমামাদা বিবুদ্ধাঃসাম্বাগগাঃ॥ত্রযাকর্ম্মত্রমত্যুস্থ বন্দনবুদ্ধুবক্তি কীর্ত্তীকলীসুবসি
বীয় ত্রিবীধীবগদিমুদা॥সুদর্শনদদর্শকত্র জগদীসর্ব্বযজ্ঞনীসুবাগ্র যাঃস্তু তাগিবঃ সুবিস্ময়মদাদ্বিহিঃ।ডদী

ইত্যাদি যুক্তাদী স্থানবৈর্মধ্যবর্ত্তিঃ সংযোগ্যবৃদ্ধদঃ সর্ব্বস্বনবৃত্তিকারিণী॥ মিথ্যাজীবনযঃকাশ্চি দলুনাদি
দিজীবনি। ত্রিবক্রঃ ত্রিমিতির্মসা হস্তক্ষ্ণ মৃত্তিকা॥ সংগ্রহযন্ত্রগুসম্পন্ন স্ত্রাগিন শূর্ত্তযযসী। মুগালী বা
যসম্বন্ধঃ কুযকযঃ পুনঃ পুনঃ॥ নকর্ম্মা দ্রুঃ প্রসঙ্গানা কাযবাগ্নি চ জলযামন্ত্রাদি চ দ্রব্যাবীজ বক্ত্রনাযঃ
দিহ্নমিযা॥ কুক্কিনবকাক্ষী॥ ৭ ॥ বাগঘজ্ঞকবাযাসী কুবাগ্নামযিবাগিগ্নাক্রোধঃ যাবাবকাবীনা ক্রি
মিবীতাদিযানিম্॥ বক্রীকাধ্যযনাদার্য্যা কুবকর্ম্মসুসাধিযঃ। সাযকস্ত্রাগিমানন বলযাগ্নাদিযানিম্॥
কুস্থামাম্যযোবাবন যকদ্দীবযানবঃ। সুখবাবাযসী বৃদ্ধঃ স্ত্রবযামাদিগাযকা॥ কাতনবধবস্থাম্ন গবা

বিগীয়কা॥ দক্ষিণবস্থবত্রাদী যাবন্যবিবদিনঃপাংসিনঘোরবহুঃখী দহ্যমানঃযবস্থবৈঃ॥যাস্থাঞ্জলি
কাকী স্নাযস্থস্থুলকণ্ঠকাদণ্ডসংক্রমযথাব নাবিকঃগালমলীবকন॥স্কন্নামিস্কদবাববা যাসীবিশ্ব
মযাতকঃবাযমালুকগৃহ্রাযি বাবকস্কন্ধনিগা॥যক্ষীযিকংকড়র্থ সাংগ্রাহ্যযাস্তুতানিবাবাস্কা যকব
দস্মানি দুষ্টসঙ্কাদি দুর্ম্মনাঃ॥যাসীবৈজিকিকঃস্থুব বযাদংস্থুষ্ঠবিস্মদাবর্ষকাঠীসদস্মাগি সর্ব্ববল্লা
স্বকহগা॥মীনাদিজলজংদ্যাঃ যাঞ্জলাদলহ্রবা॥গীমাবিকবগীযাদি নাসাংগ্নিনাবদস্ক্রকা॥যধর্ম্মমূর্ত্তি
বিষমঙ্গলবা হিন্দক্ষিমাগীকুটিলগুরুবাঃসুযাজলহীস্কগবস্কুবাত্র বকত্রমস্কন্ধিবিগীগুযাদাঃ॥সবু

[illegible]

স্নাদিষু জায়ন্তে। ক্রূরকর্ম্মাণি লগ্নস্থে শুভদৃষ্টিবর্জ্জিতে বৃশ্চিকঃ। যাত্রা ক্ষৌরং গৃহমার্জ্জনং। অনন্তবুদ্ধাদয়ঃ। মন্ত্র
বাত্রকর্ম্মাণি সায়ং কর্ত্তব্যানি। বীর্য্যবান্ মীনবঃ। গাবৃতঃ কাঞ্চনাদ্বারা। ক্রূরস্থানগ
দৃষ্টিকাশ্যকর্ম্মস্থে ক্রূরস্থে লাভবাধিতে। জন্মস্থে যাদিষ্টকর্ম্ম ক্রূরস্থে সনস্থে যদি সাধ্যথাঃ। ৭। যাদৃশ্যে
কাহাঙ্গবং। ক্ষত্রাদানাদিবর্জ্জিতাঃ। ক্রূরস্থানে যাদবঃ। মধ্যগঃ কাঠযুগনঃ। ক্রূরস্থে বৃশ্চিকঃ যথাসী বিদ্যাবঃ
জিবালকাম। কেতুযুগনঃ জ্ঞাত্বা। ক্রূরস্থে ভূমিলাভনঃ। দীনাবাবাদিদুঃখীয়া। মন্ত্রবানিবলস্থকঃ। প্রবাদুর্গন্ধ
বীরুসঃ। সক্রূরস্থে লগ্নস্থকঃ। যানবিক্রিয়বালব। বানস্থে যদি নিবাবযঃ। নূবী মুখা ক্রূরস্থে কঃ। ক্ষত্রিয়াসাম

মুক্তো রাগাদিবর্জিতঃ শ্রীমান্ সর্ব্বগুণান্বিতঃ॥ সদ্যাবুধ্যা ত্যাগী ত্যাগী স্বস্থ স্তব সুখী॥ যস্তু বস্তু
বর্জিত সমদ্যপ্রবুদ্ধাত্মা॥ কুর্য্যাদ্বিরক্তো গার্হস্থ্যে জলাদ্ভিন্ন কমলবৎ॥ যেকদুঃখী সুখী ত্যাগী নিস্থি
য়াসা স্তবৈব হি॥ ভুঞ্জন্ত স্তস্য নিস্থবন্ধা কাঙ্ক্ষিণ্যা সুখবান্ধবঃ॥ শ্রীমানধিসমুদ্ধরা॥ ত্রি
ন্নানাত্মাগিনাস্তদ্ যস্তু নবকথাকিদোসাহস্যানবখাবিত্ত সত্যবাদী স্তবদ্বলী॥ সুবুদ্ধাঙ্গ সনাদি যে
যঃকথা নৈত্রসাদকঃ॥ আদ্যবাস্মিকাস্থায়ী সস্তবস্তীসগ্রামনঃ॥ লাকদ্বয়ং বুধ্যস্তু ত্যাগ্যস্তু ত্যাগকি যুগ্মা
দ্বয়ুগ্মাস্তদ্বদ্যাদ্যাসাকিঃ॥ বিনুস্থ কাবদ্বর্ধ্বনন্ধনি গকঃ যবক্ত যস্তু হঁনকনকা॥ ৪ ॥ মায়াবী কিল্বি

[illegible]

[illegible]

[illegible]

জবাহীয়াহয়মদাহীম্ তুঙ্গহীমিমানিব॥ কথাবিত্রাম্বিবক্ষাহু যাঃসুকার্থীজিবাদ্বিয়ঃ॥ অর্দ্ধস্ত্রীবি
ম্ববস্থুক্তা কথহীববনীগকঃ॥ সনুথাঃথকিমত্রয় সত্বাধর্ম্মযথাহর্বগা হীমসমাবদুর্ব্বালঃ সদাধিগনু
বুদঃ॥ সিদ্ধাসনমাগিমথমবসিদ্ধিবন্দ যঃ গ্রবথ তেমমমসমদান্ তাবীসংপুজিগাঃসুখসুবাদ্বিতবস
তুস্তুঃ সকিস্তকাবিধিবরবিরুমিগাঙ্গঃ॥ ভ্রূকিসুসকাববানথজাকিতাঙ্গসাযবিবর্ত্তীনামবতুর্থঃ॥ ০ ॥
অথমক্রথাবাব॥ ভগবন্ত্রহুমিচ্ছসি যত্রহাবসদীযগ সর্ব্বসত্বসুখোপেত বক্তুসর্ব্বসিমানঘ॥ ভগবানা
দাঙ্গুমিত্রয় হয়ন যত্নকঁবুগ্রমুহর্ম্মেকাত্রমামসাহুত্বা কবুগ্রীবাহিতো হনা॥ লোকিকাযযদুক্তকঁ

৭ বাজাবাব॥ ×

मीवाभी यः शतीवकलिप्रियः वीरमाश्वनवास्यागी रुवद सुवस्य वः। यविष्ठ दस्वे वस्तु यानामादर्कमिष्ठ
किं समदावाजकः श्रीमान् यदा गामयशीरुवः। यामाकाधिष्ठे गाष्ठीगा इर्वकस्यानिकमाविकः। कलदेमीद
कनेव सजानिर्जवालयं। धर्मीवद्रुकः श्रीमान् बुद्धिमान्मीकलस्वकः। गुणीयः यविष्ठ स्मा तुषिवा
यान्किनासवात्रदानदमशीलादा वनूत्रदास्वयक्ष नाः। यकाविनादिकानूनं निमीमिवकथाइमवाः। यदा
नमानमाः प्रस्वः प्रदानशीलमयमाः। गुणिनः कान्किमकर्म मयान्कियवनिर्मिताः। ६ ॥ गुरुगुरुरुद्र
लीवृगां यमयार्कस्तुनृयाधर्मीगत्राप्यकमादं जुमादमगुरुगुरुवीजमनागजवीवी निमम्नाः प्रतिना

দশাক্ষরঃ দেবমমা ক্রকৃত্য ত্রয়বুধী মদাযযঃ সীঘ্রদঃ সর্ব্বসর্ব্বযঃ সন্তানী বিঘ্নহূদনঃ জুস্থঃ সর্ব্ববিঘ্নানি
সর্ব্বব্যাধিনিসূদনঃ ॥ ঋণহন্তা যথা হয় যুগ্মবীজ বয়বয়ঃ ॥ ব্যাধিদুর্ম্মিত্রাকাঙ্খী কদাযীনযক যমী ॥ জু
যজ্ঞযুদ্ধবাদ্বিঘ্ন নম্বনাম্বনীনাম্বনী ॥ ব্যাধিকাঃ ব্যাধিকীযাকা ক্ষুধীযুগাবাকবদ্যাযনবা ক্ষুধামাত্রা ভাবঃ
গ্রহঃ যুগ্মবান্নযী মানবামনুপুষ্যায় ভাগী ভাগী কবদ্রুণী ॥ জযাযা কজবামৃত্যু গজবীযাকি হয়মঃ মীনীঃ
ত্রায়মঙ্গুর ব্রহ্মদ্রাসবভাবিনী ॥ জুক্ষ্মপৃষ্ঠমদীযালা বসুবন্ধুমাকবীযসর্ব্বী মকাকীম গন্ধুর্ব্বমোকমান
মজা ॥ হগবকীদ্রুণানাম বন্ধত্রযঙ্গকঃ সদাযযঃ সদানন্দী ব্যাযকঃ সর্ব্বসম্পূর্ণ ॥ কযযুজাবিধিনাথ ক

-ভদাঃ

নমস্তে দিসযাত্র নাঁকদন্য শ্রুতসিদ্ধমি কৈবল্যবস্তদগকঃ॥ স্বজ্ঞস্বাদিসমানাং গুরুগুরুগবসিদ্ধিকা
মসংস্কবগ্রাযার্য নস্ত্রবক্তদযানিধ্য॥ ওযাক শ্রবিবক্ষস্য জগদ্বস্তুবিশাবিনাঁবসুবন্ধুবহুহুষ্ট নিষ্ক
স্থাঃ গ্রিবিবার্জলনা॥ সুখানলাস্যবস্তবনি বিনিগকাদিক্ষবিকীর্ত্ত কীর্ত্তিঃ॥ কৃত্যাগিমস্বাগিবিগাস্মহ
খা ক্রবাকবগ ভাবিবগমাযি॥ সুখবুদ্ধিমজাজগা ত্রমুমাবস্তু নাগিবাযবিজগমালাক্ষ বিস্মযাস্ত্রব
মানস॥ মজ্ঞযস্ত্রামদাবাদা মগাযাযাস্কিকথন বস্তুত্রযঃসবান বঃ সদজান বস্তুবধৃকা॥ জগত্রাযিম
সাবুযা গুস্কাবুযাজিনালযঃ॥ সর্ব্বস্তুঃসর্ব্বদর্শিবি সর্ব্বসত্ত্বদিস্থিতঃ॥ জনকঃসর্ব্বভূতানাং সাক্ষমাত্রাযি

৭২

দিনস্তু দিবানক্ত কীর্ত্তিকায়ুধ্যমসঃ অগ্নিলি বাহুঃ সবাসাদী সদিস্তুঃ ত্রিযতিমান্ সুমহিবক্ষ
যব যামিনীগণ সবকাঃ বিদিকদবনাকল ত্রিস্থাদোমমণ্ডলঃ দশাকুশলসংযুক্তা দশযাবসি
দ্বিকঃ নবমাদিস্তুলাযুক্ত সবজাবার্যত স্বয়ং সুখন্তু রাগ্ন্তু রুমি নক্ষত্রগ্রহবাসব। বজাবার্যযবী
ন সম্বন্ধ ক্ষত্রনরযগঃ সুখ্যক্ষ কনয কীর্ত্তিক্ষ নবত্রাবর্জ্জ যাযিছিলা বায়ুত্যাগঘনাদিকক্ষ কযুগাঃ
স্বাদিবিক্ষ্যজাসাত্ত্ব পুত্রস্ত্রীধনানাগণক্রয়যদা স্বদানিযাযাবলা যাস্তঃ স্বর্গনমবমিত্রসুদ্রব ধান্যাদি
নাশীস্তগাযাদস্তুনঃ সূর্য্যনাগাঃ স্বাঃ কুর্মবাযবৃদ্ধমুখা মুবুজাস্ত্র কুনাযাগ গতবিষমবাদবঃ যত্র

थविधानमवा। अतुमिस्थमिथमर्थं जगदिप्रविनाशकः। तावद्बुद्धाकुवाहुं सुगतावजमद्रदिकमामहं
कविष्यामि वज्रत्रयस्यविधिं। वमवधुवा। शृणुतावमहावाजस्त्रवज्रत्रयस्यविधिं। वक्ष्यमाणं य
त्रुर्थं बुद्धयोगं। तत्रादौ यजमानं वजावाश्यस्वीकथ्यः। कर्तुकामाविद्यावादीन् शिष्यः। सर्वं मावार्थ
मवा। सत्वस्याः जाकिदयाः। लुद्धा। सामयत्रामंयवतमवादिजुमंयवा। गाद्धिकधर्मकदी। यविद्यजंतु २०
वुमवशिष्यः। विमथमर्मीपुरुषीयवमु। निवादिवामादयलाभमायः। लुद्धाः। किंगधीतुवुकर्ज्ञाधी। स्वभवशिष्य
तुवुवमवक्ष्यः। अज्ञावुद्धिदयावाश्या। कायस्याकवगार्थविहाः। ज्ञानिनानालिविष्ठ्वा। दठाहावादिकाविदः। वि

स्वाम्न द्रुमाश्चम्पिलमिषाकत्राक्षवयावकाः वकपुष्पमदीवृक्षाः मधुरीगाकवाश्वाय पुन्नागनागकेशराः
कत्राक्षवयावकः सिंहपुष्पद्रुमाश्चमाधवीमयनाग्रच्छ दुम्बरलिंबद्रुमाः यावकः कीरवृक्षश्चा
सिंहपुष्पद्रुमाः कथा॥ ॐ यादिगुणसंपन्नाः प्रशस्ताः द्रुमयः क्रमाः गविंगयमुदीघायु वहिंकुलद
नृपाः बीजावगुमदर्शादि वृमरुदुदुहिस्वामाधवगनसंग्रह यारूवंश्यकाविनी॥ कथावविंश
मकः॥ मधुरसासमाग्रह्य यावलाकुलरुदकः सिंहवल्लदधिकीवा ह्यगन्धादिगयवावस्थकाय

ধনাঙ্গাঙ্গিবাগাঃ বস্থবীজাবরীজগাঃ বিতুস্ত্রীনৃপতিঃ বিতু নাগবাবিঘ্নৌত্রাকদাঃ॥ক্রান্তাঙ্কুশগব
নকণ্ঠবৃক্ষা যক্ষঃ মৃগানাবগবস্থর্মঃ কিবক্ষাদিবাযীক্রমকঃ ত্রবাযা ক্রাঃ মূবিতিঃ খিবিবক্ষীনীযাঃ
॥ইন্দ্রাসনাবর্তুলবদ্ধকাগা নক্ষাযকাঙ্গাবনকঃ ক্রমাযাঃ॥ সুসিদ্ধিযুক্তনধনাদিধান্য কৃতার্থবাযিযড়
নুতবক্তি॥ ক্ষুদ্রযক্ষাধিযগান দিত্রাবাহুসযঃ ক্ষুত্রাযাত্রী সুবিবিহ্যাদি কাবিঞ্চাবিতবক্তিবা॥ যথা
ঋবিতঙ্গবাদিবিত্রাগঃ সবসিগাযুতমপুষ্পযুক্তঃ ত্রাবুর্যবঙ্গাবলবিযগন্ধী নানাবিদ্যাবুবাবস্থ
কাবী॥ সবাসম্ভবসংকীর্ণঃ কুসুমসহ্যাদিসংকুলা পুষ্পখনুবিসংগাঙ্গি কুমাহিত্রসবর্যুকঃ॥ ক্ষুদ্রজম্বুকগ

পুষ্প

জালগ্রন্থিকাদিবল্মীকঃ যবীকযজ্ঞাঘৃকমিশ্রিকথা॥ সপ্তজলনিযঘত্র গ্রন্থিকাদিবল্মীকবর্ত্তিবর্ত্তবিত্তাদীনাত্রম
ঘৃতযাত্রাহবনিমদিনী॥ কথাদৈঃ গবাঙ্গীল দুর্বাণিযবুবাধবা॥ দ্বিগানীদীত্রমাস্তুযা যাস্যাসাগ্রহকাঃ
পিণ্ডী॥ ॥ ॥

বাথয় সম্বিকায় লগম্বিনী। সাথা আবকাবস্থ্রা কাষায়া কতিয়স্থয়া॥ যীকবস্থ্রনিস্থামস্থ্র সম্বাবম
লগম্বিনী। যাযা আযীকবস্থ্রা বৈস্থয়া স্নবসাবসা॥ আমবস্থ্রনিস্থাযাব কাদুনিকাবসাবসা। সাগু
ব্রাগাকস্থয়া আস্থয়া নির্গস্থা নৃযস্থচসা। যস্থাবিদস্কমাত্রবত্তবস্রগস্থ্রে নিবস্থাকম্মস্থ্রগুলকস্থথবিস্থ্রা॥ ২২
সংস্কৃযযস্থামিকবকযীকীনীলানি যুস্থাগিযথাক্রমগা। যস্থানস্থাযবাযুস্থ্রে সাকগাযাবনিস্থক্রমাকস্থ্রেম
কতিযবৈস্থানী শূদ্রাগাকসবাধিযা। কতিবগস্থ্রেলমযাদিবিস্থ্র যবযকস্থ্রাযবিবস্থমানাস্থ্রবীবসু

২২

যাদিবযাত্রবাদিনিযর্ক্ষমন্তলদক্ষিণে বৈশ্যস্যাস্তিযবাসদক্ষবিজযবকাগ্নিকাযাথিদ্রানীসযেবিক
বস্তুমাদিবনাস্কুত্রাস্তিগলযতবহ্নাযোগসমবগঙ্কগানুবহনীনানাবৃগাযীতনীযাবৃত্যাদিগকীকসংধার
নির্গযাবাধিকদক্ষক নূনীবাদিবনস্কবমবগনিস্থাযিবাদাযুদাবাযযীনুযবগজযানিকবাসাত্রবিদক্ষি
কী কাম্মিস্যাদিবদনাকাকুধিযাদুশ্বাবত্তিক্রিযাস্কযদাদিবাবিমিতবকাঃযাদীনদক্ষত্রিক দুবাশ
সবৈশ্যকীকসমলগাযাগ্রাবৃদ্রদানিগাস্যাত্রিকবাশ্বযশ্বযিগমাক্রীলগুত্রাস্তিবা লাদাসাবসথাযিব

নিষ্ঠয়ং যুক্তিবদনামবাস্তুকীসাবিকাজ্ঞাবাথাবিধিনাসমাদিগমনাঃ সংযুক্তযত্নবাঃ সাসকামবর্ণীদ
বাদিবর্ণপ্রাতবাঘক্ষবীজ্ঞাবাথানিপুণানিমিত্তকুশলঃ স্বাপ্নাদিগ্রন্থার্থ সুবেশ্যুর্গযদিবাস্ত্রবস্ত্র
নিয়র্ণভাস্কাদদক্ষোঘবাঘত্রবাক্ষগমস্থিগেল্যমণিবিযবনগ্রাস্ত্রব নাবস্ত্রীমবর্ণস্ত্রবন্ধুবিগমাবিঙ্গা ২৩
নসাযন্তবীবাঘবাঘবনীহবঘদিগবাসাঘবাদর্শঘবগ্র দক্ষিণকীযবগযস্যানিযর্ণবিঙ্গানলবাঘবস
।ঘিস্বাসাঘবর্ণযদানবযকত্রাস্বন্ধুযীতাহর্ষ নানাবাগসমাগমাহিমবর্ণগাকাগ্নিবাদার্থদ্রব্যাবিস্বা

নীয়া স্বহস্তে মিবর্ত্তবত্তবসর্ব্বনগ্নাত্রয়কপাদিস্থত্তবাবিহাসা সামস্তর্যবাসবসংখ্যযাত্রা শ্রীস্থানকাহস্তি
দিগাঙ্গকবাল সাহস্তি হাগন্নবজিবিহস্থা। অস্তয়নিশয়দিগাঙ্গকবাল নিশয়বায়স্থদিগাঙ্গকথবাবায়
স্থহস্তাধিয়াজিদিগর্ক কুস্থাধি হাগন্নবজিকথবা। হস্তাম্বিনী কার্ত্তিকমাসিগাব দগানকাগাদিগকাত
মাজী নিশয়কাগাদিগযুক্ত হাসা হস্তবন্তমস্থাধিকযুক্তদগাঙ্গা। নাহবস্থা হাগতত্তজ্ঞমূর্ত্তি বুদ্ধস্থা
যুক্তিমনুষ্যমূর্ত্তিঃ। যাস্থানশাবামকবগাকণ্ঠ বামকবগাধিকডিমবলী। সংস্থাস্থহাকনবস্তিহাগাদি

স্তুবিরুবানাগঁব্রজতুতুকঃ॥মধ্যজাদিবস্থানিধন্বনবগাদ্রিবাস্তিগাল্যধ্বং গাঙ্খল্লাসীধনকর্ষনবযকথী
তার্থদস্তানিবা॥যস্মাচ্ছল্যমনকবাঘনিবর্দ্দেহ্লাদ্বর্ষঘন্বকঃ॥ঊর্দ্ধহুমীকলসমস্তকবর্ষাবীলাদিকঁযাজয়
হা॥ ॥ভাগ্যঃঁধনধান্যদঁকনকবিত্তুত্রাথদঁবাদুর্ব্ব॥ক্তিঃঃআকিমুখত্রবাহুতকর্ষাবঁমুখবিধান্যকাঁগীবা ২৪
বর্দুবকঙ্কযাবনিধমীকল্যানবীবিক্রম॥সাবাস্থঁজমণাস্তিগাস্তুগ্রহুতর্দগাঁহ্নিঃখ্যাসার্থদী॥ঊর্দ্ধিগাল্যযবী
কা॥ ৩ ॥কলাসবাজন্য॥বিদ্যাবর্ষযোগমদর্য্যকুত্তদবালযাদীস্তুবিধাস্তুকামিঃঅকিধাস্তুনাসাস্তানিবুদ

কাবসংস্থনযুক্তাদিনাগঃপ্রাপ্তাঞ্চিমাস্কাদিগণাঙ্গযষ্টি, হস্তবহুসমুত্তমিকঁকথৈবাবাবাদিবকনাদিত
গণক, সাদিযগযোবনিযষ্টিনাদীভোগ্যাযথাযুক্তিবিচারবার, প্রাবীপ্রবীণ্যুক্তবদিক্ষুকদ্রুমাসঁ
নিবাবাসদয়সার্থ, বাবুগ্রাদিঙ্গগণদষ্টিবক্রঃবিশ্বানলাগাঙ্গমিকাতেমাসী, বাযযকাগাদিগকাহঘঃ ২৩
বাগঃাহলৌসঙ্গৌসাধবমাসিকয়, যস্কাধিযাগাগণদষ্টিবক্রঃসিজযকাগাদিগণাতেমাঙ্গ, ব্রহ্মানকা
গাদিগপুষ্কলাগঃাঞ্চহুত্বীগ্রাবণমাসকাল, প্রাবীনদিগ্যাকসবক্রদষ্টিঃবাযযকাগাদিগণাতেমাঃ

ॐ विश्वानलाङ्गागकपुष्कराग्रः सर्वसर्वीकनतुवक्षसमस्कार संधाय यत्नेक सुवृत्तमाषीभ्रुवाविहाय घत
मासिमासि संवारहवास्तुजसाधियस्य॥ ॥इतुक्रान्तीमाथवर्वाबुविश्व विरोधपुष्कुरुकिजसमाभुक्षीवा
वर्जयेत्पूजनीया नागाधियाष्टकीवरभायवावेः॥ पुष्करराजकुलिकमुनीलं कक्कीटकेदुर्वनिरुक्षुध
नाहीमृणालोपमर्द्धविपालं वाहीमुवक्षुरुसमाहियभी॥ दुर्घियमीवासुकिनीवविल कण्ठस्किनीलाविकाक
काम्बीकेशुरुतयग्रेधवलावरासं मूर्द्धिस्किनीलमनकनागी॥ विग्रहकाकावजनीविरोध कीवावबजाकेश

কর্ম্মবীর্য্য সংগ্রামনিষ্ঠীকরমানমন কামাদিকাবাসকবাহুধরঘা॥ দবন্দ্রবিজ্ঞধরবিশ্বধরন সংস্কারযন
যাগবজ্ঞহযযাগমন্ত্রিকাঠাদিক্ষাবলিস্থন বক্ষাদিকাঘাঘদিবুস্তজঘা॥ ব্যবহারমাঘাকর্ম্মবযন
সুহবন্তমধ্যেসুমনাবিকীর্য্যেগমসক্ষমীক্ষ্মকরবনকী বাহবথমানাকবিবিক্ষাদিক্ষঃ॥ প্রাক্ষকবিঠাকিবি ২৬
হাগস্তবিদায় সংস্থনকানবিহাগযবানিবন্যাহাকস্রোতহাগপুবকঃগুরুকাবিযহু ভ্রমার্থকাম
সুগবৃদ্ধিসুসিদ্ধিবাঞ্ছী॥ সাকাধিতদুদিহনবনসাদবাগা হাস্যাবঘুস্তগনবন্ধুসুদ্রকানানাসিযেহবয

দিব্যনরবরাগকাষ্ঠ মস্তস্থিতিসবেলরসিতুজর্জমস্য॥ যুষ্টমবন্ধিবনমঃস্ববিনাগাবাস্থস্তানমস্থিত
নল্যধনক্রযাবাযুষ্টগজাত্যমদিমাজগবাযবনূনা স্থানাগানুববদাগবলরসিদ্ধঃ॥ আযাকযক্ষমযদ্বিত
রবস্তকাষ্ঠ বালীবকগনবেরক্ষনিস্তুকাবিবোমাগবাগমিলরযক্ষমদয়কাষ্ঠ নানাজলস্থরবাস্থিতি
গুরবাগঃ॥ স্থলাহুবাহুরনিমিত্তমনবুব নাবাথগিল্লিযগমানজনীবিধর্যা॥ ক্রবাবিগল্যধবগীকলঃ
নাহুসর্ব্বস্বাবিমুখ্যযবিহুজমুদাসমস্কাহ॥ ॥কক্ষঃ॥ সিক্ষযযদমুকাকুস্থমধঃস্থগর্ক্ষীবস্তুবুযমি

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

দিগিমণ্ডলসিদ্ধানাং ঘণ্টাঘবালমসনাঃ যবিসংযাগি সংস্থযাত্রযবিজযবিদ্রিহ্রপূর্ব্বাবিবাবনঃ
প্রস্থানিকুস্থজলাহিমিকং যক্ষযক্ষাবিধিনাযবিযুক্তগিস্থৈঃ। সুগন্ধসুখমণ্ডিবাযুসুসম্ভর্মযাতৈঃ প্রমুদ
গনসমাগানন্দসম্বাদকালাবিগতবসলগাত্রক্ষীণবীনপ্রমুক্তঃ হৃতকিথিলগনাদিদ্যসংগাদিঘাষঃ। ২৫
স্তুনিযাবস্থযনা। ৩ ॥ কক্ষঃবিদ্যাবিযোলযযাদ্রিকাঘা বদলীস্কন্ধগিবস্কুপুগাঃযাযামবীঘাবথঃ
কালস্থত্র ঘাবাদিতিঃসংযগহিবীস্কযবাগাভূথগীস্তুবুগিস্থাযাং কক্ষকসুগনাদিতিঃবনযাত্রাবযাদ

ঘন

ঘ্যা শ্রীম্মিকার্থকলপ্রদা॥ সংভারকদাবসমুদ্রে দ্বৈযাগ জুমানমালম্ব্য সমাবিষ্ট্য যুগ্মযাত্রিমর্ম সংঘবাতবাথঃ
বজীবনস্বাভাবিগাদ্বিধিস্তঃ॥ বকুলকুবকালগাঙ্কিকাজাকগাব বলদলসর্বলাসাস্কাবংগস্থকদম্বাঃ
বর্ণমযূর্কাযলাসাঃসন্ধিযত্রাবযীস্থাঃ ওগসিনঘববর্ষাস্কাম্নিবুযাত্রিস্তঃ॥ সুখযদাবেত্তবুবাধিসর্ব
দিগীগবুজাবনবাসিদবকাঃযস্কাযবাবিগ্রসংবুস্কৃতমিব সংমাদস্কিল্যিমদাযবাকর্কঃ॥ ব্রজাবাস্থতত্তা
কথ সদাবিবাবনাসকঃ॥ নন্দ্রদবকাকার বৃক্কবাঙ্গসমস্থযহ॥ দাবুস্কৃতমনাবাহয বিদাবাথস্মদাবল

।ज्ञकर्यवाश्यवृक्षर्द हृयंधर्मार्थकामदाकरःकृपवार्कीकरसमज्ञकः सुवर्ष्ठ्यसादिहिवकाधिकः।विला
कयस्थ्यमिदमदीवुर्द संछदयदिद्धनाधियाननः॥मदीयुदोयग्रयथाज्ञमेण कुवरस्नाधियदवरा
ज्ञाधनागमस्त्रनविरूदिकारी यकयसीदानयकर्मदीय॥कर्णावनाव्यादयराजवार्ते निशम्यवाज्ञायविपु २८
गुमादः सुवाचदावायपुवः सवस्म स्वयुज्ञमामप्रमवज्ञनेस्त्र॥मदनवैलिगलाकवीदयल्लुहविलः
वुवाधिजिनमज्ञः हृयसंगीकिधाषः।दधिजलयविपुस्वापिकुस्त्रनिधाय ववलिगनयनाहिः सुदवीहिः

ग्रहयुद्धं॥ वसनकुसुमदामीदारदिग्धीडवर्षैः यवमसूदिगविष्ठैः स्वामिवर्गैः प्रवर्ग्या। विपुरसमसुरेभीषिकाकार
स्त्रागमध्ये गुरुकवजलधिकीस्थ यथैः सुसिद्धैः॥ ० अथ विमलसमाक्षे कंठवीणावपूर्यं यमनियुद्धदया
यमन्त्रीकदिक्समन्त्री। विविधसुरगणकंकावतंत्रायसाग्रिं विधिवदमानियागिदामयंसुरोथा। स्वस्वदिक्काध
वाजस्य मन्त्रैवयथजमीवनेगिथावविस्कुथाः कुस्तुःकुलिंगयागिना॥ वकवृद्धविनुद्धीरथ गवाग्नालकथा
स्विकःस्थयनीयाविधमनन वायवामायनेनृप॥ सुसिद्धथविदाखव दिक्समपूर्णमण्डलासर्वलक्षणसंपूर्णं गि

[illegible]

[illegible] २०

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

সাত্রীণিস্বগন্ধযুক্তমলক্ষণানি ভাবাদয়ঃ সূর্যদিনায়বজী॥ নদুক্তির্নকৃতবৈষয়ূর্ধ বিবিধ্যক্তাস্ববত
মিত্রাঃ জানিবজ্ঞযুষ্মাস্ববয়ঃসূত্রঃ জথমমাবাযসবজদক্ষঃ॥ কাসূদ সাদিমনাস্ত্রবাযঃ মদস্ত্রনাবস্ত
নিহিঃসগিস্থঃ॥ বংগাবিকাহিস্থবিনাদযত্র বজীমদাস্ত্রনমনামদীগঃ॥ অথবানবর্দিযা ক্রিনমীযাযক্ত ২৭
জনীমীনীভ্রাতুকামীন বাসাবিবামসূদনা॥ অথত্রজগায়মদানুনাব দ্রব্যবীজধর্মসূদযগাহীবমস
মুমাদমনঃসুবুদ্ধ সাক্ষাথিদস্ত্রনমিবাসূদর্মা॥ এবমেত্যযবুদ্ধথ ধর্মযবাযনানৃযঃ॥ বিদ্যানিববগাস্ত্রনি

[illegible]
[illegible]
[illegible]

কৰ্ত্তৃত্বৈব নিবানীমাকৰ্ত্তামিনী॥ জুনীতাদুঃখেতত্তামাযুনির্যং সবাবুজাবাবিনাতানাথা॥ যবস্যবত্রাদবিতক্ষ
নাথ স্বস্তুকমাসংযবিত্তাধনাথ॥ ধনকনকনিধীতাসকলমাতসলীলং গজতুরগযবাদিযুত্তবাবাদিবাস্ত্রী
অগমিসুতগদেযস্বনযস্বুনির্যং সনযগগতাবীবমানবানাকথবা॥ ওকিসবিস্যদযালা লোকযাবাবিশীল ২২
বানাবিসবস্বুসবাবতঃ কথগকস্তুত্তাদধী॥ সবাবিস্তুতমিস্তুমি সাধিকানাস্তলকর্ত্তা॥ বিধিবস্তাজনত্রাথ
কামেঘবদবাদিবাঃ॥ সুখবাবক্তগদ্বস্বু বসুবস্বুস্তিযিষ্ঠবাস্ত্রবতাকদনাদন যুবস্তিযজলতনু॥ কল্পবা

विधिवद्यज्ञ बुद्धसंघस्य यद्विधिं निशामय मदावाद्य गृहासक्ताय आकथ्य ॥ कथादीयागविद्वज्जी शिष्यकंठीवज्रा
रनीसंघलक्षगरुमा मे गुरुबुद्धादिसवनी ॥ कुलीनकुलसंभवं सयलक्षणवर्जितं विगलक्षणसंयुक्तान् बल
वयायथाजयगाकतः सुशीलाः स्वविहारवासिनः गुणान्विता क्षिप्तगुणाश्चलक्षणाः यबुद्धपूयाः स्वविरागक
रुताः संस्कृयथाविधिवत्समस्तकाना ॥ • ॥ अथ सकलिंगयानि ज्ञेयवाणिश्चिरग्य मुगकवसमूदं
दसमस्त्रागसंस्कृकेलगामिसमिदानीं वाक्यथाविधिज्ञ दकजगवविलाहिकलविस्तरनूर्यायवाक्यनंथा

विदधानिरुद्य त्रिवर्गसंघायगहातमाथाविशालवंशायुघशीलगन्ध त्रिलोकधर्माधनधान्ययुक्तः॥ पृथवज
धराविष्टः शुभनक्षत्रवासरा पूर्ववधिधिमावस्य संधाधवीजमध्ययगा गतः॥ शुभाघफलसंदत्त कर्मेशगविं
विश्वसः सर्वविघ्नाकर्षाकार्य यविजाघविधानकः॥ कस्यसमर्थयत्यो सर्वकारुतलाक्षुनावीजंशुभनस्मसंवा २२
घ कलहादकसवनी॥ गतकः कर्मकरावाज सम्बाधवीजमावमग सकलकर्मजकः शीलारुवगारुमघः॥
यद्यधिवीजहलुयवयक्ति जिघिष्टयपूर्व सुगन्धिदाः धर्मोकरावीर्घकवायुघस्त धनन्धवावाक्ससुखलरु

क्षाविप्राक्षर्वजकुलाभंगाक्ष वावस्यकिंमासकिंमवथागीसथादकायाश्चेविद्विदध्या क्षगद्विगार्थस्ववजा
याद्विः॥ रुवाकिविमलेनतस्कथवादीद्रुनव ववकनकनिरा क्षांगीकमस्यामक्षाइसीसकलगुणविरुवःमज
किंगावकस्तुतमिकतुवनवासिथादकंयाविदध्याग॥ • ॥स्वकुलकिंमानविदीगुनीला यक्षादिवर्जहुतल
क्षधाकिः॥ यवयासृगीःयल्लवगथगस्व वलावधीवादिहिवमूर्ख॥ वलयकाकाम्ववहुतक्षर्त्त सक्षंवसूनादि
गलावसक्का मूर्खीद्रयीयुमसर्यद्विनर्त दक्षासनीविक्रिगयक्षवुद्ध॥ कमूद्धविश्वादवमध्यसंस्थिर्ग घटंगमा

ह्रीं

कारुविशुद्धकारुनीकलघ्रपूर्वैरुवविश्वपूर्वैर्न पूजयथागविदम्पूजासनी॥ दिनसमाचरय बलिदाना
दिकीविधिकुर्यात्रिदिनयावत्तावत्कर्मप्रसिध्यति॥ विशालवंशगुणशीलरूपधा सदाधनाधागविमुक्तवि
प्रदाशरवक्रिरुमाध्यवरुदवश्यकाः कुर्वक्रियकलशाश्वनमूर्ध्वा॥ ० ॥अथाग्रमंत्रवक्ष्यामि जिनप्रियस्य पू २४
जनीबीजरुपदिमाक्षाः रुपानविश्वसूदनी॥ यक्षस्तुनमयीर्यिर्तु यक्षवृद्धांगसंस्थवा तथा शास्त्रनपूर्यन्तु तथा
गणविनाशनी॥ नगस्तुगसमायुक्तं लाकलक्षीविवर्द्धनी पूजयत्पूर्ववक्त्रजी वज्रसत्वगुणान्विकः॥ गंधैर्न्नाना

विस्तेर्ह्यः गद्य गस्वादकैवर्वैः सर्वलक्तु हिद्धिर्थैः वस्तुगस्वरमातमैः॥ गवाबुगासृयुमदार्मिसंकुल हव
सुखसंक्तवद्गक्रमानवः जिनप्रियथाः स्वर्गिलक्ष्मापिवा जगद्भवतीमहयाहिमेव॥ ० ॥अथ वक्तुमि
च्छामि यक्षनीजिनवल्लभां वाजल्लादिनाथव अद्यनिर्घामाग्नीविह॥ कर्तावीशुद्धहरुगाल सकसुयानियाज
यगकस्थवदक्षिणवामे वस्तुकसपिर्घलिखेत्॥ अथ गस्वाद्यगर्थेन संयाक्षन्दानवान्तविनेवामे यागवाथा
गीकलठाक्षाधिवासयत्॥ यक्षवुद्धस्ववुयाद्यु यक्षवस्तुकमातमैः यक्षहिवुयदावस्तैः यक्षयक्षजिनप्रियः

माघकालसंहतः सुशीलाथ मुक्तिकाविष्ठाज्ञानतः स्मात् स्य कात्रः शुविवस्तुरुगाकिसमयश्चेमहम्
सर्वगोरुद्धारनासमर्थयश्चयागीन्द्रा जिनप्रियंसर्वक्रिया॥ सीताश्रुतांगसमविर्यः सदीर्घमायुः
विशालवेशाप्राप्तिवाक्मुगाठमार्गं जिनप्रियंयकमसाधवाजि॥ तथैवादिविधिहृय समावलोनिमस्तुघ २७
कावयाविधिवद्धा जिवलेपमुखांगधान॥ जुथाधिकरुगा समायाजिनाठमीनीलाक्षनादिकांठवा
संस्थयवासनगुरु॥ विधिवक्तिनमानर्घ संघरुजनमावरासंतुष्टवजिनसंघ कमायथाविसक्रियगा

মধ্যাদি মুগকৃত্যে কথমেব যুগাদয়া পুত্রমায়াসিতা দুস্যা সকলস্তবিতাষকঃ॥ শ্রুতিযনক্রমপূর্ব্বং সর্ব্বো
যায়বিনাগানী শ্রুতস্থূলাগমাবাজ মতয় ভুবনস্থবাবিবমতয়ত্বয়া লাকাথঞ্চ রবানিতাবিক্রয়াসা
সনিয়ক যথাক্রকবাগাযবঃ॥ যঃহুদ্ধখকাতুনসাগবস্যব জিনস্য ধর্ম্মত্রবিনাদিদর্শয়ন্ত সবাসমস্তাবগ
সিদ্ধিমানবঃ সবত্রমানাজিনবলিপিষ্ঠয়া॥ শ্রুতিত্রীসমগাবদানবিধানযবিবস্তে নামষষ্ঠমঃ॥ ৩ ॥জুয
বত্রমতসিদ্ধমি মতযাহথকমুবিবান। রামস্বরুগবস্বর্ম বাজযীবিধিবিদ্বা॥ রুসবানুবাবা॥ জুথাবিবামু

निरुद्धा रुगवांस्तमनिवर्ती गृणुमुखनमित्य रुपर्धर्ममूलमी॥ सायानेखनमार्गस्य नृणां गतमूर्ध्वजी ज
लधीयमस्यव रुवाच्छ्रुत्वा रुदपूर्वे॥ विपलुतमदावस्थ मवीथा दीतुवाचर्घा गवश्यमगवद्यथ्व भाक्षाथ
भाक्षमूलमी॥ ॥ पूर्वविक्रामनस्कार डविवाहृयसलमंधर्मात्मकमदावाचा वभिमर्कमूलमी॥ ॥ पृष्ठा २६
मदावाहुः मुनिवसजिमद्रियः कुंकाभाविदावादिन् निद्रावाचयवायघः॥ पूर्वावचायिकः पूर्वं नलिना
यलोचनी॥ पूजपूर्वाकमारुमि मंत्रसाधनसिद्धिदा॥ वानादिकलसंपूर्णे सर्वगस्यसमाकुला॥ सूक्ष्मावकुला
५म५

কাকা গন্ধর্ব্বা মুনিবিশ্ববৈঃ॥ দেবনাগমনুষ্যাদ্যৈঃ কীর্ত্তে সীমাক্রকামহিঃ। কর্ত্তুমিচ্ছামি পুত্রাদে কর্ত্তুমিচ্ছ বৃহাম
যী। দুষ্টসঙ্কীর্ত্তিয়সর্ব্বং কর্ত্তুহীমনায়ুষা॥ ॥ সুখমিব বচনস্য নিশম্যাখিলরঘুবীরাজ্ঞানিপাকবান্ধু
কা বিগতীমবিশ্বনাবিশ্বানবরাগিকরহাগ। প্রণম্য কারুণ্যকথকা নিশাময়সমাবিষ্ট সমাসামিদ্বিবাধিনী
॥ কত্রাদীলাকধাতুস্থ জিসাদেশারুবন্ধ্যাযবমানুহিবকানুঃ সমহিস্কিস্ত্রিকিথা॥ বাল্মীকিবজ্ঞথবরাণ
বগাঠাযন্তুকঃ জিবনযবজ্ঞাকা গাবজস্মিবুবাদ্ধা॥ একাসকাযবকুকা গাহিস্থুকাকথিববাগাহিবকা

যবস্তীব রিক্তথা হুস্তনবকঃ বিকাস্তি দ্বাদশাঙ্গুষ্ঠ দক্ষাবিকাস্তি পুরুষঃ মনুষ্যসাক্ষিদক্ষন প্রাবাবতগ
বানিতি জাগমবর্ষদর্শঃ বত্তিস্তি যথাজনা সদর্শঃ মকরিস্তর্ম জম্বুদ্বীপ হবস্তি লাযাবসমুদ্র
কুলস্তু দক্ষিণানাং হবহাদ্বা যাযাবাবা হবস্মন হুতাশু হুতুলাদযঃ জুহুগাসবজাবাত জবাযজায
যাদুকা মাববত্তিষ্ঠাম্যাদা সকর্ম ফলনক্তথা বত্তথানিযুর্ম জাতাঃ প্রাণিনস্তু হুতাশুতাঃ জম্বুদ্বীপবিক
লাসাথ কবিদ্বুদ্ধিযাববাঃ জম্বুদ্বীপ নৃপশ্রেষ্ঠ জম্বুদ্বীপাহবস্তিকা জাকথাজনমুক্তায বত্তথাজনব

২৭

স্তনঃ যবক্ষারঃ যাজনাশ্চৈব গাবো যত্র ফলানি বা। যত্র পূর্ব্বো ভাবী ফলমধ্যস্বাদু গন্ধি যগানযদাগ্র্যযাস্যাঁ যদি
সূর্য্যাঃ যদ্যমবদীতাঃ কীর্ব্বীকঙ্কযমানবৃন্দাঃ যাজনাহ্বসমস্ত্রিশ্চ বিশালঃ শাক্রযাণিনঃ সুব্রহ্মণ্যা
ষ্ঠসীম্য পূর্ব্ব পূর্ব্ব বিদদকঃ। অস্মি শ্রীযমদাবৃক্ষ সুসানামাবিষ্টকা যাজনানাগমিস্তু যা বস্তনাবদ্যাজন
ষ্ঠাঃ যবক্ষারঃ যাজনাশ্চৈব গাবো যত্র ফলানি বা। দশ যাজনমাদশ্রী বৃহবদ্বৃহবামাদ্রমণ্ডলাকাবি
শালাযমযকযাহ্যা কত্রনামমদাবৃক্ষঃ কদম্বগ্রাবিষ্টকা যাজনগাদমূর্ব্বী বিষ্ণুপ্রাদ্রিযাজনঃ। গা

[illegible]

[illegible]

[illegible]

কামামায়ুবহুন্নুর্গা রমাগন্ধীয়বাসিনী॥নিত্যাময়মদাবাজ কলত্রাযদ্রবাস্মদা জীবুদ্ধীযাত্তবামযো রব
ত্যদ্রহাগাযুষঃ॥কন্যাযুনাধিকাবাজ ত্রনিযকাযুষঃসদাঃ॥যুদ্ধবিদ্যকামস্থোঃ সার্দ্ধবর্ষদ্বাগাযুষঃ॥ড
ত্রবকীববাবিষ সদ্মাযুষ্ডলমাগথযবলাবানীযাঃ যক্তবর্ষদ্বাগাযুষঃ॥কন্যাযাযস্থিতানীস ক্রীবি
নামাযুমাঞ্চিকাকল্যস্যাত্রাবকযানী নিলন্যামধিকল্যকঃ॥দশবর্ষসহস্রন্তু প্রজানীনৃযসহমাস্ত্ব
কর্ম্মবশীকৃত নিযমাযুষ্ঞিবিকাঃ॥বহুস্ত্রীযকনার্যা মধিবাজাবসক্তিস্থিতবাঞ্জবিবুযাগা

বিবৃতকাঞ্চনাধিপঃ॥ বলসম্পত্তিনঃ সর্ব্বে যুদ্ধবর্ত্তুমবায়বাঃ॥ কাগজ্রবত্রসাগাঙ্গা বিবিধবস্ত্রদুষ্টাঃ॥ সুং
ক্ষ্মযষ্টীযকাঙ্গুরা মদ্রসিবাম্বিতিমূলাঃ॥ কথীকাবঙ্কীত্র্যাঙ্গ দধিকীবযথাক্রকঃ॥ বজ্রবাতমদাবজ্র বা
তাযীবসাবৃকাঃ॥ ভূম্বাদিযুগিনাদ্রীযা রীযাদ্রিযুগিনাম্বিকিঃ॥ কম্বুগ্রীবযবাক্রষ্ট ক্রম্বুগ্রীবাঃ প্রগাসিকা ২৫
ঃ॥ দিমাদ্রিবিশ্বাযাবৃত্তবাযাবত্তুমাক্রদঃ॥ গজ্রযুদ্ধগমদ্বে বিযাম্বরমদাবযঃ॥ গম্বর্ব্বাসুবাসিত্ত্বা
ঘঃ॥ তাবিকামাক্রকামহিঃ॥ কর্ত্তাদিমালযামত্র সিদ্ধিদাহবিভাবকঃ॥ জাতিযানাদ্বযাসিদ্ধি গাবশ্ববীবি

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

স্বাম্বনকোণসৃদর্শবাজ্ঞ স্বীগামকুণ্ডমবদুদ্দিথাগমাঘগাঘঃসমনাস্ত্রনাবা বিগস্যুথিস্থাঃমুখবি
গামুগানন্ত যস্তিবিষয়মাস্তিগ্রী নমাদ্দবর্মিবুবিবিনাস্তিবসস্তবাত্রযাবাস্তুভবযত্নাস্তিনা জিনাম
জস্যাযমুনীন্দ্রযাগিনঃাবরাজবাগামুস্তিবাজমন্ত্র জিনাযমধ্যুযমগিঃগাবাজগত্যবিত্তাগযবঃভগায়ী ৪০
হাবত্রমাবাহবত্রাঃনুবাস্থী।।সুখাবিবাসীত্বলযুগ্যহুমী সহুমিযঃযমদলাস্তনত্রঃাস্তিনামজগাত্রগিল
হ্যস্তলাত্রমাদযন্দবনবাসুখীবী।ত্রযাদথত্রীকমনানবন্দ্র জিনন্দ্রমুনিযুবঃসবগামবাঘসংঘঃগ্রকি

ভাবিনাদিঃ স্বরূপ ব্রহ্মমণ্ডলমণ্ডলালী॥ দিগাস্যদিক্ষু প্রবিষ্টগবাবাগ্রসীস্থবী পুষ্টমনাহিবাসী যথা নানর্দ্ধ
খলনাগবস্থ নবাধিপ্রসীমন্তগঙ্গসাখাজুথ্যবাদ্ভুতিবাজমূজ্জ্ব প্রতিষ্ঠিতাস্তঃ যবথমদীপ্তবঃজুথ
বদজ্জ্বরভ্রাণিবস্যব সদ্যেতকবিসুবন্ধমাদ্যা॥ সাস্যবিস্তুমিস্থামি যত্নথাকঁপ্রসাদিলাজগদাস্বস্বনাগী
যশাকমাভাতিলাষিণাঁ॥ সমাবকথ্যথজগজ্জনাসদি সমাগবাসাভিবনানুমন্ত্রিণা প্রবিষ্টি পুষ্টপুষ্পমনক
দাদস সমীবগাবৃষ্টিকনৃত্যবিপ্রদাঃ॥ ডবীবিকাগীবগিবিবাজবাসিতিঃ॥ গুরুবিহিদ্বিবাগ্রাঃগ্রানব

শাস্ত্রসম্বন্ধুঃখেসমবদুঃখিতস্ববাঃ দ্রব্যস্তবকষ্টেঙ্গিসনাস্তুকাবিগঃ॥সমাবত্তকাস্তবস্ত্রবন্ধাখা বিগাঃত্রমাঃ
বাত্রসঙ্গাস্কমাযদাঃ যবস্যবত্রমবিবর্ত্তযজন যথাবধর্ম্মস্বনিনাকুলাদিবঃ॥সুখাগবঙ্গাগন্নাথ মত্রযাম
নমিষ্টমীহেথাস্যাত্তমিস্কমি বদবাবীন্দ্রশাকদীগ্রাহগবানুবাবাসুকাবযচ্ছত্রদিধর্ম্মবর্ষ হৃত্তাধনগাল্য
স্তুতাস্তুহক্ষেগুরুসিগ্নিস্থবযবিক্রকস্তু বত্রাস্তুনাগকৃতবসহসী॥বিদাবমুযস্তুযনমবহৃপা যাবস্বগাঃ
বাদনসর্ব্বকাস্থাদবত্তবিস্তীবিধিবস্বদাম জিনস্যমঘস্যবহ্নজনদিতাডবাবুর্যবসমস্তমগ বিশালবঙ্গাঘ

পিবাববক্ষীযষ্ঠ্রাবযচ্ছ্মমিদিববাক্ষত্রাপাদিবীঙ্গযদমুক্তমিষষ্ঠা॥শ্রুতিত্রীমুগাবাবনরুত্রাক্ষাযবিবক্ষীনামসম
সষ্ঠা ॥সুখ্যদ্দত্যবাহুযা মত্রযযুগযামবীঙ্গযুষ্মাবশ্লাকানা গুহুদিবিঘত্রাজনীবিবিবষ্ঠক্ষবিতেন ক্ত
বাক্ষবমীষ্ঠবী॥মত্রাবমদাবাজা মত্রিষ্ঠিষদমসকষ্ঠিসুবাঙ্গিনমীযানা মযাযত্রযনাগিনীমাযুবাবিবি
স্ক্ষিনানস্তু নিমস্তুর্ধাদিমীবনীগুহাযমষ্ঠমবানী বুদ্ধবীবিমাস্তুনা॥ত্যবক্কত্তমিষ্ঠমি বুদ্ধানীবিঘত্রাজনীসু
শ্রাযবাজবুদ্ধাদি যক্ষামাববাষ্ঠমুবাষ্ঠাবাধিসবামদাসবা শ্রদযাবববাসিনষ্ঠাসিস্ক্ষিনানাযমাত্মা বিত

নীলসমযুক্তা।সমধাত্রিবর্ত্তী ছায়ালাবালাযগন্ধবাঠাহস্তিকাবাদিগীমৃগ।শিবাত্রাবযুনর্ম্মসুঠাপুষ্যাত্রুমাদি
মর্দ্দক।নক্ষত্রাঠপূর্ব্বাসিনঠাকযাক্ষাধিযগীবাত্রা।ধ্রুকবাক্রমদাত্রুঠামসাযাকবত্তথাদ্রি।তবকামর্ম্মনাযবাদি
ধিবত্রাজযিথাদ।তথবক্ষমমস্তিবাযবিবক্ষাযবিতক্ষ।তমস্তাক্তসাযিবদ্যাকলস্তাসিদ্ধমত্রা।ক্ষগবামদি ৪২
লাম্বদাঠসযার্ম্মবাসযুত্রাথ।মদক্ষত্রগমলবীসুদক্ষাঁবঘণ্টাদি।যদাকানতনস্থজানাবামবযগনপ্তুত্রাসপু
বস্তুযমনাদবাসাজুথত্রসন্নাস্তুজযত্রনত্রী।নবাধিযঠযক্ষত্রসন্নিত্যাযাগাথামিমীমক্তিনামাবত্যাথ।সদিত্থ

বস্ত্রাবিগিসস্থগীত্রীযথিবাস্ত্রাযবাজাবীন রথাকীমথযাকিলাসপুস্ত্রবিধিবমর্বাস গুণাসমানযত্রবীন্য॥
॥কথাকিমিহ্যযবস্ত্রবাজনি হুচ্ছব্রবানামমদানুরাবান্ত্রেগস্ত্রবনন্নযনাহিবামিধি যথীমদহিক্কিনবা
সিনযহ্যসিস্ত্রিবাবিনস্ত্রবাযা বনমথাজিস্ত্রিযাঃলাবযালাসবাযানঃ হুস্ত্রধীত্রিযনাকিনঃামগ্রাবীঠবহাঃ
লুহ্যী হুলাবিত্রাতস্ত্রাবিবাবিস্ত্রাবাঃবিমস্ত্রব নস্ত্রগ্রা যাস্ত্রবাসিনঃাবকীবাসমিযত্রাগা ধুম্মবাগাবিবু ত
বঃাজ্যাযাত্তবত্তথাস্ত্রি যুম্মাকমস্ত্রবনাযথীবল্লকাহাগযিথদ বিধিবস্মমসস্ত্রিবাসযীবিবানুকস্যাস্ত্রী

[illegible]

[illegible]

[illegible]

নিবাসিনঃ। জুনুবাসঃ। ঋক্ষমূলা। মাতৃপ্রবাহিজিহ্বা। গ্রহগ্রাহিবসর্ক। নক্তনাঃ। বাগ্নিনিস্ত্রিণাঃ। কামী। হাস
দাযাগ। বিবুধৈঃ। কৃত। কাযবাণ। চতুর্থ। নিমসাযাত্ত। ত্বরণাঃ। গনাযবাঃ। সুখিষি। যথা। গ্রহা। বিধিনাসমর্দি
বিবিহুত্ত্বযিযক্ষ। প্রসন্নাঃ। স্মসাযিবযযালাবাহিলাঃ। সাবুঃ। সগঃ। পাগিনাসুবাবি। ঘালবাবক্ষাবী
স্বিবিধবাযসক্ষযানামঙ্গলাসাদ। সুখেন। প্রকল্প। যবিনাদিনানা। কৃষ্ণ। বাবহৃ। যত্ত। দিগাঃ। নামসক্তিঘাঃ। গ্রহ
সাযযগঙ্গনা। কৈবসুসকনন্দ। সগাবিধিবহ্ন। যুষ্মর্কুল্লিগাদিকানা। সুনযাগথ। যাস্তুবা। সদর্দি

৭৪৮

বাসমর্থ সখিবসন্তনির্মলাঠবল্লকীবণুবীমাদী স্নানাঁযবিনাদিগান্যাবীঘ্যালঁকাবস্কাদী মঙ্গলাসোদযুবৈর্ঘীড়
থত্রগবাদিঠাযাবগাম ঠিবিকর্বনামসমদ্রিঘঁযগ বিঠ্ঠুস্থলীলা চবঘত্রজাসু তবাবিগন্ধবসমানযাত্রাঠ
ঠানঙ্গিঁঙ্গীবর্ঘ প্রগাদী মুগগাগগ্রামাজুথ্রেযবীস্থুষ্ঠমনবাঘিযঁন নৃযাঘিবঁযঁঙ্গযত্রনত্রঠাঘিবঁবাবস্
যগিযযেমুঙ্গ্রাযালুবাবিঠামত্রসাবঃ॥ ০ ॥স্বমযবৃষ্টসাগনদিস্থিগর্ঘ যিযাঘিবাঁঙ্গদ্রবমঙ্গনত্রীজ
থত্রদেবীশ্রুবগবস্কঃ গুঙ্গুবগাযাঃসবিবামনাঙ্গ্রী॥ কামদীঠাযমুনীসমুম্বা নমাযেমুম্বাবিধিবত্রেহম

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

বুহিঃ॥ধ্বমস্তিকাদবগমনসমগ্র নাগমনবাঃকিন্নরসিদ্ধিযোঃ॥জুত্রাক্ষবনসগবাহ্রজর্দ্দনতাহিবাসলনিশা
মনত্রাঃ॥দদর্শদুরাদথ দিব্যাবকা সাযাসুতযাতিগতস্কিমালিনীমসুরবক্তসিনাদবিঠং নবাধিরাজাব
বিবাদিমানিদাদিমকুঠঃসমাবীষ্টং দিক্কবলসমাবিকঃ॥সুবহ্নুযুধা যানঃ বহুযসমিমণ্ডিতঃ॥নিস্বর্ণ
যসযবিঃ বনজালসমাকুলঃ॥দিমবলসযকুঠঃ বাগাযনাধিবাজিনীমুক্তিবাদেবসবীষ্টং কিঙ্কিনীজা
লসংযুতীযশ্মশ্রেণীসমাযুক্তং যদুত্তমাসমণ্ডিতীবল্যবৃক্তঃস্কুবদ্দং দাবাগ্নিদাবলম্বিনীমালিকুণ্ডলব

पूर्व वनात् एवं गत्वा सेवितः सम्पूर्णपुष्पवृक्षैश्च शालिकुसुमालंकृतः वसन्तकालाकर्षणार्थं नागमहर्षयुक्तिर्गतः
पुष्पवर्षुविशङ्कीर्ण समन्तात् सर्वतः कृतः विचित्रविदमाकीर्णः वदन्तश्च वदानकाः सुखासीयगयानीयैः देव
राजैर्मनोरमैर्दिव्यैः सेवितः कल्पादकुसुमायलैः शुभैर्वमालिकैः कीर्णः समालोक्य समीपस्थितः सिद्धगणः
महादेवं योगीयोगमिवायतीनर्वसंदर्शितः एवं ग्रामुनिर्मदिमुवामुवाचिकीर्त्तयां ननामभूमिमूले
भीतिकर्त्तव्यार्थयामास एगवर्त्तकथगनीसमिष्टुवर्त्तिगीहय संकुलाञ्जलिवानकथा एगवर्मुनिगा हूवलाका
पृथा

নাথনমস্তুতা কর্ত্তুমিস্মামিগত্বা বিধিবৎ সংযতাজনা বৃত্তর্থক্রিমমাবাস জগন্নাথ মহিলাষষ্ঠীবিলুপ্তবি
ধানায় সেতুবন্ধমদর্শি। স্বর্গাধিকঃ মানুষবঃ সবাধদ্ধ সাম্রমদাবর গণ্ডমপুত্রকাঃ পূজাযবাবস্থ
থানুষ্ঠানী যাবত্ত যক্ষকিজনাঃ দেবযজ্ঞাদিনাযধর্ম্মঠীলানা সুনুতবাহিলাবিধীধ সাযবস্থ কৃষ্ণযজ্ঞ
নানানিমলাযবা। শ্রুণবিস্ত্রযিকস্কন্দ উদমত্ত্বযুদেবতা চন্দ্রমস্তুমদাবা জ কবদ সুধিসকমঠা। শ্রুণি
সংগ্রহ হুযাল শ্রবণ্ডাত্তমিব যবানির্জ্জগামসদাবাদা মসমিবুদর্শাবনঠা। ০ ।নবাধিবাসাহথযযাযগা
ভুয

সমুদ্রমেবাবিলাসবীজমঃ।।বিদ্যাবিচ্ছমলবমদর্ঘসমাত্রমহাহবিত্তংযদর্থীজবাবুগামুয়েহযনহী
নীবিত্তুজবিলাহবজাম্বিকনাজুথাবিবাস্তনববাজবাজ সুনীদ্রবাজাযদহাস্মিনীনাপুথীবিবাজম্বযগন্ধ
বয়ংবাযমকাস্তজগত্রযাযিষ্ঠাগবাষ্টদর্থীজগদ্রসবাজা সুনীদ্রবাজঃপ্রগিবযমুবাবিদ্ধিজযথা
জলিমন্ত্রমুদ্রি নিবর্ত্তযামাসপুর্বসকাশী সুনিবযুগযদ্দেসবাদিহাহ সুবনবদনুজাদিসিদ্ধি
গন্ধর্ব্বিবদাজুবিলসদনাবযযবমন্ত্রগাদি ভববস্তুবাযুগা জীগাযমানামুনাক্ষী যাবপুর্বজগবনক

যাবৎ ত্রসরেণুলীলমুগিমাত্রমাত্রাকনকঃ দর্শনিগ্রামবীরজুকাবয়ব্যাসমিমিমমবঃ।ষষ্ঠরাজেগাব
কণ্ঠকাগিলাঘকলিব লাকুল নিম্নাঘাদিয়ব সর্ববালিবক্তামিত্রাবুহ্য হীকাবীকমর্ব্বযযনীয়মতমমিথ্য
মাসমনামাদিব বিস্তাহুমৃদুকাববালিদিকমর্ব্বসংযগানাত্রাদকীসকীস্তুকুসুমাস্ত্রাজকলাদায়লমল্লি ১০
কিঃমিলকাবস্যকনাত্রাঃ কুন্তযাত্রেলকগলিঃ।শ্রুযবমাদিস্তিঃপুষ্যঃ সর্ব্বস্তুমমযুথিকিঃসমস্তুর্গাগঘাগা
কাবদ্রাকগুলাম্বিকিঃ।যদুহ্যদ্বাসনিবদ্ধঃ যাত্রেস্তমলক্ষ্মকিঃ।বিকানবিকর্ণাস্মি নানাকীতাযজ্ঞাত

নিষ্ঠাসর্ব্বরত্নসমাকীর্ণঃ সুবর্ণকুট্টিমঃ নিষ্ঠাবন্দনাস্তম্ভনিষ্ঠোপেতঃ দিব্যগন্ধপুষ্পধূপবিশিষ্টঃ বিজয়কীর্ত্তিধ্বজপঙ্ক্তিঃ
বায়ুবাসলহারিণিষ্ঠানানারত্নসমাকীর্ণঃ স্বারঘঃ সমলঙ্কৃতঃ নিষ্ঠাবিরত্নরত্নসূত্রঃ কূটবিরত্ন নাকে
ষ্ঠাবরত্নবাজিকাবাঃ কুণ্ডলদিব্যহস্তভূষণাকিরিঙ্গলনৃত্যজঙ্গাঃ রাগসুরুক্তসুরুজাদিতিগ্রামী
গাঙ্কবলোকলহরিমাঙ্গী বিরাজিতবিচয়যান্ত্রিকস্কন্ধাগাম্বুনবসমাস্তৃতা দিব্যালঙ্কারসম্বিতানন্দ
রযাসাময়াগুণ্ঠি কিঙ্কিনীজালহারমানানানারত্নবিরচিতাজীন যুবুষাস্বামিসুন্দরানারাবাক্যপুরসঙ্কীর্ণ

কদাক্ষগবিদাক্ষিথঃ ॥ ॥ অথাবনীগঃ ষবণী কথাবিধং কলাবিদাবাকযুবত্রাহনী বিবগ্রসলংযুবম
স্বধর্ম বিস্ত্রব কুণ্ডলাবসর্জলী প্রহৃষ্টহাজনাযক যাবনীধর্মদাযতি মঘয্যহাজনাথায় যাবিন
ষলমাবযত্রাবহুগিম্বমাথুর্ল লিঙ্গবাঘকযযকীযাযসীবিধিবযুক্ত যজনীবিবিধমবাবা কীথস্ক ৪৯
বদিগ্রকযুষ্টিক কালম্বিকবিজিকমবস্থালিকাযিযুক্তনানাবিধমযবাসিক ত্রযকাগাবদগর্বগুহাকবা
একক্ষিযহমাত্রা সুনীন্দ্রীকযথবাসংস্কাব বম্মনঃস্থলা নিনাযতিদিনসুবা অথযাকঃসমুক্তয বিধি

২৩X

নাগঃসুবরুনাজাদ্যনাগবীর্য্যসুবিবাসমবীস্থবঃ।অলীজিযকীসুবর্সবসবিবী যুর্ব্বীসমকাবিবাঃ
সবাবাজিঙ্কুযাদেমস্থকবিঙ্গাবিবাবনি সুনীন্দ্রসবাজ্রমগাযসলবী। ০ ।।সুযঙ্গলকাঠাসুবর্জবাদলী হ
গাকযহুযুনাহিসুযঃমোস্থাযবাঙ্কবিবকাত্রিবাবিকসুনীন্দ্রনাথাহিসুবেগগাসদ্য।।সবাবযুস্থাকুলিহিহ
কীহি লত্রকাগাকিত্রাবিবাবিকথাসহকিসুবর্জসমঙ্কুথাযঃ যুবঃসুবসাঙ্গমনকাযুঙ্কঃহিগবানথকাল
স্তু ধ্বমগণ্ডীত্রনাবদাবর্সবসলকালস্তুন সুনীন্দ্রদর্শনাসকান।।কাবীযর্জবঃস্থীসাব লাম্বিঠাসাজগস্ত

বৃষভো দুরাসীবৈজীকর্ম্মা সমাধিকনমদিদা মুহ্যা হসানাজগকিয় হাবযাঃ ত্র হাবিস্মকর্ম্মাবিসংখ্যা
গীকান্তকালবহুসুহৃত্তপদা গঙ্গীনযাবাথ বৃষ্ণজনযা মদমাল্যকযাবী ত্রদমত্রদবীসলিঃবরমিন
সনমব বিধিবত্রগিযবেযা নযাঃসগ্নিশ্রাস্তুবুগিশ্রযাসুবী কথত্রমগঃত্র কমন্ত্রদ্বযযা বাস্ত্রবিবত্র
যমিবক্তকামযা জগত্রমীবজগনাথমঙ্গমাসিথাকবগ্রীমকিবাজগুত্ত স্তুগাস্ত্রশ্লগানশ্লবাবিবাসীগ
বুদ্ধানুহাবনমবানুহাবী গঙ্গীনযাবগ্নিবুদ্ধযমা হঃ।।কনকনাযমংস্থ কত্র বীত্রগিযবেযা নীজিত

বক্তিগীয়ত্য হগবন্মুখাবসথাকালায় হগবংগত্ত প্রবহুং মধুনাগৃহাসিষ্ঠসার্দ্ধং মহদ্ভিশ্চ সুরাসুরাদি
সাধিকথাস্থাবিজগতিবক্ত্রুবাবীয়ক্ষবাণগাতথামধ্যাক্ষণত্বা জনঃপুণ্যক্ষয়েথাদিমহাবিষ্ণুয়
লাক্ষ সর্ব্বঃসর্ব্বজ্ঞজগথানাস্তিকানাস্তিদুঃশীলঃ কাথিব্যাধীদরিদ্রাজুথেযস্তব হ্যালা হগবন্ত
নামবাসযুক্তবিধিনাসর্ব্ব মগদমণিপুর্ব্বাকালস্তমুনিসাহুলবীয়ক্ষবাদিগবঠাকালায়মিস্তদ্গ
ন্তুপ্রবহুংসদসাধিকথাস্থলক্ষগমিস্তবনমুনীশ্বর কুরুপ্রদর্যজগগমিনামলীডভিষ্ঠবীয়ক্ষবস্তুত্র

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ঘুগ্রানুগ্রাবনত্যাদি দার্থমিত্যাত্মনাথাবুদ্ধ্যর্থ্যথথৈব জগামমৃগমদ্বিধী। নানাবস্থ্যমদসকাদানিযুগী
ষ্টমস্থাগ্রমানার্গল সীযুবাধ্বজঞ্চ্যবন্ধীবিপুলব হ্যস্কিতগ্রামবঃ। নানাবস্থিমমৃদকাস্থগাপিকত্যাপিত্থ
বস্তিবৃদ্ধ ভক্তাদ্বুদ্ধিঃগীবেস্তুঞ্চনিবদ্ধসমাবিকিত্যামিকঃ॥ ০ ॥ কদত্র ভগবান্ বুদ্ধঃ গাঙ্গামিদাজগন্তু বু
যাত্রবীবরমাদায় ত্রবক্রামনৃপালযীবাগাবিত্যামৃদর্গদ্বুদ্ধিবরঃ। ভূকাকল্কিকঃ সংগ্রামস্থিকঞ্চগ্র
বামবরঃসীবস্থবন্ধীকিত্যাগিত্থঃসানুবরঃস্থকাঞ্চলিযুট দ্বিবুমত্যাবগঃ। নানাবস্থিবীদবঙ্গিন

যদ্ভাগ্যস্য সানামুবাচ কথাস্ত্রনৃপমহাশ্বনীত্তগাস্থূজ ধৃতাস্তঃসবা সহিতৈর্যগণে মমবিকথবাবিস্ত
হিবাসিবিনঃভস্ত্রবেসবিবরাগারিনিবথামাদাম্বকাখাদব সর্ব্বজগাদুর্ম্মদ্রমনবৃঃভবাকড়লাসথ
নাজুথাবিবাসীলেমলসমাবলা বিবিত্রবনাদ্রিবকগবাঙ্গলীসদেমুগাস্থুনদযত্রমুতর্ম সাপিস্ত্রদর্শবিবি ৬২
সমনঃযুবঃথাবিবাজিবাবিধুমুখবন্নথা স্ত্রথাস্তহুস্ত্রবিজয়ত্তনত্রিনঃখাত্রিবিবাথাদনবন্নথাজন স
বানুকম্বাবরগাশ্রুবানিগাঁকজাবিবাসীস্ত্রবুবিমুনীনা মাবাঘবানাসিবদিস্ত্রিনানীসগন্ধবাদিসমাবি

নানাবিধময়সিত্তবনপৃথক্কৃথকা । • ভুক্তাত্রবাগাযবিপুষ্টদর্ষিণা দদর্শদুরাত্মনিযর্ম্মবাযকণ্ঠভুক্তাস্থ
বাসত্রসবোসমাগমা সমাধিবা শুক্লত্রযবাযহাহিতাবা।।বিগিন্ধবাগাখমুনীন্ধবাগ্নিসগিন্ধবাগামিবমর্ম
মাহুসামেদীত্তগীলাকৃত্যাবগাগ্নি জগদ্দর্দুঃখবমিত্রগস্কুথাত্রগাস্থ্যোব যুর্সত্রকস্কুঠ বিগিন্ধবাস্কু
যুবগানিমবানৃযত্রবুতামনিযুদ্ধযাদ ব্রাত্রিগাদা সুমিত্রদদ্রুযাথাঃ কঃ সমীক্ষযবর্ষদ্রসাথলার্ক মুনী
ন্ধবাসংগমদর্শনিদাথা নানাদ্রিমধ্যাস্থিত ধর্ম্মশীলাঃ সমাগতাঃমানুবাসদীগাথাত্রস্থান্ধযানাদব বু

ক্ষয়বকাঃ সর্ব্বত্রবলাত্রবগায়লীক্ষানানামবাবযুথাক্ষলযাত্রিবাবিগা সদা মনস্কৃত্য জিনার্ব্বনাযব
সার্ব্বমাবাসবেলবক্ষিত্রব ত্রবীযযুযাত্রবুগম্বদক্ষাঃ গাহ্যমানা সনুজাথবাবিহ ইযে স্বকুর্ব্বত্রগম
স্ত্রকক্ষুশ্রাসদা যজিমাবজিনথবক্ষিণ ত্রযুজযক্ষীবিধিবাত্যিকা সদ্ধাবামথগজাত্রিবর্গাধিনাযকাঃ স্কু গ২
ত্রবধসূত্রিযথাগদুক্তিকা গম্বর্ব্বববনবনাগসুবাবিমঘা ব্রহ্মাদিববনমিক জিনমজ্ঞমথাসদাবকু
শুকুমুদাযেলমাবকীনা ॥ ॥ ॥ স্বর্ব্বকু সুমসাসুববর্ষবা ত্রকস্থমানাধবগীযস্ত্রিধা বিলালযামা

সমবালযহ্ন্তঃমহীনদোল্লকুসমযমুকহ্ন সমীরগাজামিবাদিক্ষুগাধিযহ্নাত্রসকাবিযুতসিকথ
বাসিনঃ ত্রবিকিযুথাস্বকগাবরাদকাঠামযুবযুথা হুতাস্বিমাদিনঃ স্ত্রীঘাবিবাসিঃযুবকাস্ত্রবিস্তন্য
কিলাসঠঙ্গোব্রযবিযনৃযে নতানযকিযুবুযাসীঘানাগ্রগীমনাহ্নলালিবগীর্ণ গন্ধর্ব্ববাক্কাকুল যু
গ্রহ্নযঠাস্তুগসীকযাঠবেকলাঘকাযাঠ যুগাকবরামুখিযসীবানাসমুদ্রযকাঠিঠানিমাগ সমাজ
যকিসমযুবাযিস্কঠাজুযুবতুগগকযাঠঠাযিবসমধ্যানাযজনমাকিমুগাহসাস্কিকাবঘকাযাঠ

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

বাথ ইত্যুবাচ নানাজিনঃ বর্ষশতং যত্র নন্দা বাবাঘসীগ্রত্রিবর্গসংঘৈঃ ব্রাহ্মিগালস্তবসীস্থগাত্রঃ সমুদ্রবস্ত
কতমিগাত্রবর্ণা যবাত্রবুদ্ধাত্তগবাচ তাব সুবক্তিগংযাবসহিজিলকগালসাগালাত্যর্ঙ্গসমুদ্রবেব সাগি
স্কন্দর্ত্তসাগিবিত্রিকংযবাজুবগকতযবাষপ্রষবাগাদিযাবাঃ ত্রসুদিকসুবসংঘৈঃ হুযমানাথ্যবাবাঃজুগ
গিবাস্তুমযাদাশ্বস্তুসাদাশ্বকাবা তগবানিজিননাথ্য স্কবিতাবহুবুঃ নানাদিগ্যাসিবদবস্তবাঃ ত
দর্শযন্যুস্থকলাস্ববাগিত্রবিক্তিপুঃযাবজনাগর্যয় গ্রিবিত্রনবাহবগ্রাহুমানিকবিস্থিতাদস্যগ

বাজবোটকো থরুষঘালঘ্রগবাদুগাবিনঃবলাস্ববালক্রীকরীবাগিনা নবাগিব কোল্যমদীবুদা ঙ্গবাগি
বিরুদ্ধমালবীকুবকাযযালিযুথাগিযব কবিকুঘুমব বনাস্তবুমর্ঘযামক্কবুস্ত্রীনিবাকোবিতেত্রবম্
বলাগিসবহিত্রস্বামবিযাগিবা কবিত্রবনযানিকা বহবমযাঘ্যাযনিলাকাতসাক্ষকাথিকুমাযীথবি গগ
গালবাবনাবিবিত্রমালাস্ববহুত্রেগাদবাঠাকথিবাবাঠবেলযুথলাগকীমুনাস্ববঘালনানগাবিবান
বীবিগ্রামানগবীবাজ সুবাসুবস্ত্রাবগমঘকীস্ত্রীজুনঘকাগযকযদ্বামত্রলঘমানামবিগানবামবিঠা

ষষ্ঠমদেবাজগন্নীঃসমাকুলা বণিষ্ঠবল্লীকযবাসবাদিভিঃ তযসবদ্ভিঃ পুরুষর্ষভস্য ব্রদর্ষিভিঃ
নিপুর্জবন্ধবঃ॥ তামিক্ষমাণ্যানবদবসর্ঘঃ উপুহ্যমানাথ্য বদুত্তমাধিষ্ঠবক্ষিণীঘ্রযমুনাথ্যবাহ্নী গাঙ্গ
বমঙ্গাহিমুর্বেযজ্ঞমুঃ॥ সবন্ধুবিবাঙ্গিতসুব্বর্ষঙ্গ বিতানবল্লীমৃকপুষ্পগোহিতা জলপ্রবীযাগ্নিকুল
কলাঙ্গিত সুসণ্ডিকক্তিনিবদ্ধসমাকুলা॥ কথাঃ পুরুষঃ পঙ্কজযজনত্রযাঃ ভাদুর্ব্রদেবুর্ব্বনাবিসীগকাস
স্কাথবনস্কদিবিতানিব ব্রদর্ষযস্যবজনস্যবসা॥ কমঃ ব্রদর্ষিকমানসীত্বযঃ উত্তযবদীবাদব

জমুনসুদাসুবস্তুদুস্থাক্তগবলযুপিব সবাবসবাবিবিবাজিজনাবীযুজযামাসজিনাক্তমঃক্রমীঃয
স্বাযবাবাবিঠিবুক্তিবাম্বজানানীলাক্তনবসমবাগমবিষী সমাঘমাবাঠবগাঃমসীঘিকীঃাবক্তিঘাব
তকাঃবাকা জুমলাঃমত্রজজলঃত্রহাদুস্থাযসংযাকা হবাঃগ্রাকাঠিবামকাঃাকাজিনঃযমদলাযকাক্তা ৫৬
বিলাকযথাবজনাবিবঠানিবঠানমাক্তযুবাযমক্ত নৃযম্যকাযাজিগযযমাঃাঃক্তযামাসজিনাক্ত
মিযা বিক্তিমাল্যাস্ববযুস্থবামকিঃমঃতাঠিকাযাবিঘিবত্রযুক্তমত্রগাঘিকাযাঠবিক্তমীযাক্তিকীঃানবঃমঃ

মিত্যস্তেন সমানিকাঃ সুখজিনাথাদিগীঃ শ্রুতসমর্পণা স্বয়ং কাসম্বন্ধে সেয়ঃ। ত্রবচাথস্থানযশঃ শ্রীযুবাগর্ম
দিলাকম্যবিত্রকাবাবিদ্রচাবিদ্রযহীবী জিনস্যসংজাকিসুবাবগীযুবী॥ শ্রুতিশ্রীসুগকাবদানি
সন্ধ্যাদ্বিযুবযবচাযবিবজীনামাস্তমঃ। ॥অথসনাসেসুক্ত্য মত্যযস্ত্রযুগ্মস্যবাদর্ষযসবালাস্ত্রী
কা নবাযক্ত্রগবাযদি॥ অযবত্রাত্তমিস্থামি বাঘিস্ত্রদিনাযস্তা চাযস্তসকলধর্মী চগবন্যবমাথবিস্থা
শ্রীচগবানাদ॥ অথবানিমিবাসাগ মহস্তিকলিকানৃযাসিদাসনসমুক্ত্য প্রকানবিত্রহীঘণ্টাত্র

গীসমানঃ সুকাদাব সমাকুলীমণ্ডলমণিসংকীর্ণ সবর্ণঃ যবিগ্রাহিণীজুত্ত বিবর্ণ্ণথমুণিমুনীশ্বরার
বিযুগ্মাস্তাস্তবনমিগাযথাদিদাসনযাযমাধিকঃ সবাধিবস্তুজমকাজিনামগঃ অথত্তাবাদিগয
মুনীশ্বর নবশ্বরমুমাদমাদবান্যনিবীক্ষ্যসিংহাসনবাস্তিকাসনে গুমালিনযমস্তুবত্তাকবীত্তযুগ ৬৭
যামাস্ত সদ্বাদযামকা নবীমখাগামকনদ্রিকাননঃ ঘটমুনীন্দ্রমুখযুবিকল্পথ বজীকনা স্তুযকাকম
ন্তুগীজুথাবদিষ্টগুরুমানুযগ যাযত্তবাযাস্বনবিজিনযাঃত্তযকক্তীগিববীববাগিত্তবাযযাসা

সত্যগাম্বিকাপি॥ সুস্থ যুক্ষনজিনসমাধিকং সকলসমূল্যনমদাঞ্জলিনা সংস্তুদযাসগাবাকবাসঃ সুস্রাস্ত
বযান ধনামদীধনঃ॥ কাকক্ষমস্তুযমদাসনামৃযঃ যক্ষাযবাবাধিবিস্থিঃজিনাধিযাত্রাযুক্ষকানাঞ্জলি
নাত্রগস্যব সাবুযমাথাহিবসুন্ননাবযশা ॥ ॥ বুযল কঠসস্থত্র দশাস্বমস্থবনাস্দঠাযজনাবানি
নমস্কবানযাবগথাঃগঞ্চল কঠসংযুক্তং সুস্রোকযুগসাগবাস গাবযসবাঞ্জলি নমস্কঞ্জলিযাবগ॥ গস্ব
লকঠসংবীণ্ড দিস্থাগবিনাযবাঃ সুস্রাকযজিনকাক্ষি নমস্কাক্ষিযাবগ॥ বসুলকঠসংস্কন্ন সুস্থ

জিনধর্ম্মদগ্রন্থ। যাম্বসী গর্ব্বীর্থ নমস্কারীর্থ যাবগ॥ ষগীলক্ষণসংযুক্তা মুনিবৃন্দনিবীদবাঃসংস্থ
গ্রহজিনস্থান নমস্কারস্থান যাবগ॥ ধর্ম্মলক্ষণসংযুক্তং সর্ব্বসমবিতবাঃ বস্ত্রযথমদাযুক্ত নমস্কার
স্থান যাবগ॥ যত হিংসকবাঃ যা জিনস্থ কক্ষিমাস্য ০। সংসারবন্ধনদলা যযাদিযবমাগাদি॥ সমুস্ত ১৫
স্থাযবলিবিধানবি ব্রজাবিধানাদিগ্রন্থ জিনাসক্ত। দিগম্বরাদিযক্ত্বব্দুবীরম্বা। দিব্যঃসর্ব্বসিবমহ
ঘিনমস্ত্র হঁ॥ নমঃস্বগ্রামানিসিবাক্ত লাবনা জিনাস্ত্রিবী স্থাম্মুদুষ্ট্রজনাঃ। জিনাসক্তগ্রমবিস্থাষ্ট্রাগ

র্ম বিনাদয় স্নাবয়ত্ত্বু সরাজনী॥ নত্যানন্দ্যৈ সব হাবিনীনাং নত্রাহিবামনহ হাবিনীনাং নির্ম্মাদবাহিত্ত
মানমানী জগীবমীবন্ধমীনাবধূনাং॥ সুবর্ণঘণ্টামুরুজাদিবাদ্য মনুষ্যবৃন্দজহিনদ্বর্ষ্যাস্ত্রস্ত্রবত্তু
জিবিসাঘমান নবামবাঘাযবিদ্বর্ষমাঘাং॥ সমাদবাজামাদিবীমুখাথ বিলাকয স্নাবামিমবদ্বর্ষাজিন
সুশীলাহবর্ষব মার্দ্দ রাথবিধং শ্রাবকর্ম্মযমিবা॥ বহুব হ্যলালিকাসংঘাযাঃ সমস্থেমাযামস্থবিক্রঃ
যাযাঃ সমাদিবাজববল্লহাযাঃ॥ সুখাবিবাহ্যসিমিত্রহার্ম্মিং জিনামজগ্রীবসুবস্থুবাসবিহানর
গপবত্রযাত্রাহিমর্ম্মযাযাঃ ×

ভকালহ্লগীশীযশাসন বর্ষসযথাবিধিবত্যবাহবাজথাবদিক্ষুযুবুগানবগ্নবঃ গাগীকগীবাযমঃ
গীলসম্বঃবকাবগীত্রিযসমাধিকজন সদাসযথাবিবিশ্বগ্নবানলাবিবিত্যস্থঃযবিমাবসাকবঃ
সুগ্রীবস্তুবাযিযযুযস্থমকঃজলস্ত্রবীযযুযকলসিগ্রিকঃ সবযকঃস্বাদমুগম্বিবস্তুকিঃ নৃযসিযথঃ জ
যবিযুক্তমাবজি সমাধিকদমমবাযযাযজিগাবিনাবযবাকসমাকিযিস্থযং জবাবুজা হীনঞ্চবীমবাস্থ
যথাভবাস্থযামাসকবগ্নমদ্বিধা সমাগবগ্রীযনগাবিসম্বাবীভবিক্রিযুঃযুস্থামিবত্রিযাজগমং সুকামলং

বালা লতাধনীস্বকণ্ঠা মধুরযূথানি নৃত্তনিমগ্ন শ্রীগোবিলাসঃ সুবিলাস্যমানাঃ বুর্ণত্রগ দুর্ন্নিগম কবিষু
সদ্যমানাগ্রবেগমনাহ্নঃ সবিদ্রুধ্রামিনাদিপ্রিতাগা হস্তাবলী লাস্বিকগ্রীবালাজা নমনতেম বাদিগম
স্বনন্দি তুজঙ্গ কাযাব পৃথিব্রজাদ্ধা পুষ্পদ্রুমাঃ স্বকুসুমৈর হুল্লঃ সমীর প্রাত্রামিনাদি স্কুগস্থিঃ সুসংতম
হুঙ্গিব যুবগীর তুজঙ্গ পৃথাযিদিনাতে বাণা কাবিদ্রুমানত্রমনাহি বামা বিবাজিবয হেলি তাবনস্রাঃ
বস্যবাত্রুমবিনাব তাবা বনবাস্ত্রেবিবুবত্রা ধনীবিদ্রানাঃ বেলযত্রসলা সদাধনাধস্মিবনাব তেবু

থাবুদ্ধিনাঃযুদ্ধিমুদ্ধিনাশ্চ বিযাসিনাঃগ্রন্থচর্চিসুযুক্তঃথাযনাবকাঃসীব্যসমন্বিনাশ্চ জাযন্তি
কালস্তুসুলাবনাথাদানন্দিযাঃযুক্তবীবরাজা বামাগ্নিনাশ্চান্তনিবাসহাজঃথাক্রমাগ্নিনাশ্চথসুগীন
লাঙ্গী হযাদিনাথশ্চ হযাদিসংগাঃজীর্ণেন্দ্রিযাযুদ্ধবলীবুযনা বামাদিবাঃথঃনবলিদগাত্রাঃথাএবত্র
জানামধ্যিযানিনায নিদ্রাথিনীমধ্যমযামশবাশ্রেশ্রসর্বমোক্ষমনাবথাত্র জগজ্জনদুঃখসবস্থানাঃ
।অথত্র থামনবদবদবা দবাগিদবাগ্নিথিবদ্ধহাবামদাসযযাবিবিধাযযাবঃ নবন্দ্রুতাধৃকথাম

নাথমাসগন্ধিপুষ্পাগুরুধূপবীযকৈঃ নিম্বচন্দনকুঙ্কুমাদকৈঃসুকামলৈঃস্কবলৈঃকলাদিভিঃ যবি
ক্রম স্কুবিধূপকৈস্তিভিঃ॥ ॥কমণ্ডলুবাঃযবিহুত্রমানসা বিবেত্তিনাথাঃসুবসংযমবিদাং যক্ষযঃ
বাবঃস্তুবিশালিরূপগাঃ যুযুজযামাসুবিমুনীশ্বরমাযবীযেসর্ব্বমদেসাজনীয সংযথাজানযবাদি
বাস্ত্রাঃযবস্যবংযাদিনিস্তবকবিজ্ঞাসমীযুধবর্জিনযুজনাযাকাবিদ্ধকঃবিলসীবজযা যুদ্ধসজ
যীবাসিনাদিযুক্তাঃগ্রাগাহিবাসজিনধূযবার্ম স্বর্যদিসাজাজিবসীকুমাথমাসুগন্ধবীলাযবলিক

বস্যা বীবাবলী বীযিনাদিযি হাসা। কস্তুবমিলা যুবব বমানি কাবিদ্ধ কস্তিলকানিবৈবানীবযকীবর্ত্তব
সাযুযর্ম সুযিদ্ধিবাঙ্কাব কলাদিকীযহ। অযবসর্ব্বাবি হবানুযুর্য নানাবিধ্বীয গহীবুযকাঃ। অথ তত্র
ল্লাসমাত্র জগাবিজাঃ। তবমিকসমসুদ্রজিনজনাঃ। নিবী কর্ত্তা কীসুগবিসমাঘির্ক লাকাশিবিযযগমা ৬৭
ভুবাবুধাঃ। কমাজিনন্দ্র যজিগদ্রিযাজনাঃ। তবৃত্তনাশ্চানযহমিমণ্ডলা পৃথিববযুধিক্ষাযবাবিকত্রম
কামবাবমশাস্ত্রনাদিকাঃ। তত হাত্রিবী কাথকভানুকাযিনী বিহজিবযাযগমাদিহাদগা হযাদিকাঃ যু

ব্যবসায় সম্বন্ধ সদাস্থবা বাঙ্গবীক্ষক সমঃ। যদুর্জ্জয় বন্দিবাধিদবন্ধ বুদ্ধ যমাবাধয় যামাদমণি
বন্ধ কাঞ্চনযুগ সংস্থ যুগ্ম হস্তে। নানাবাদ্য বিনাদিকৈ সব গণৈঃ সংস্থ মানাঃ সদা ব্রহ্মাদ্যাদিকিবাদিবা
জিবাদ্য দ্বয়ুস্ত জগতঃ জনাথা। ॥ মকঃ গুবিনাগণিবাবিষ্ণি বজীবিষ্ণিস্ত্র গুণাবিষিবস্ত্র হবানিবাল্য
যামাস্ব বহুস্তুতী সদীশ্বর স্থাবিনথিবয় যুগ্ম জুথত্র হাকিলকালবিমন সিদ্ধানন স্কন্ধকলস্থ প্রযুক্ত
দাবজীসমাপ্তিত্র যথা গবাস্থ নৃত্য বাবয়ন্ত্র বিধিব সবন্দিগা জুথাস্ত বুজ গলিনাগিমস্থ গ্রীবজস

লাকজতত্ত্ববর্ত্তীযন্ত্রযবিধানললাবনক্ষ বিবিধবলাহবত্রীবৃত্তবা।বত্তর্ত্তুজদণ্ডকমলেন্তুঃ বামত
সত্ত্ববরাক্ষমালীবীতাস্ববর্ত্তীনিহিতবর্ত্তী স্রুনানলস্ত্রনদবিহাত্ত্ব।জুত্থাস্রত্যঃ যাদিকমবরজহ
স্ত্রনাগ্নিমাবাক্ষদবীযুবঃসর্বা যুগাদবিক্রিস্ত্রুকিত্রতাস্ত্রবা যথাবিধমন্ত্র যুগানবানত্ত্ব।স্রদাববাক্ষ ৬২
দিবামিজগঙ্গুহা গিলাদিকবীদিগঙ্গুতাদনীত্রদীযযুত্থাদিকবকবন্দন সত্ত্বযবামাদিকমীষধব
বীজুত্থাবিবন্তমত্রথা হগবক্ষজগদ্ভুবিবক্ষঃস্থ হাত্ত্ব হঁত্ত্বদি স্রুকসংস্কনমববা।গ্রহবিবিববনক

স্য হ্যগবাযযগযবাবক্রঃগুরুহ্রহঃস্কন্দঃগুরুমেত্যযকলী॥ ০ ॥অনুখবাগিমাজালা সর্ব্বসস্থবো
হ্যুরানিস্কযামপ্রেমাস্তুযা বিগিমাবসমূর্জ্জলা॥ পৃষ্টাসিদ্ধিকবিসীস্থা সমাজালাবত্তগিমাঃ॥ কুণ্ডদুঃ
দিমসকার্থ সর্ব্বদোল্লিষনাঃগ্রহগাস্থিযবহুযানিধূম জাযুবাবাস্থবন্ধনঃ॥ পুস্থবাযাসবস্থ্রীহ্রনক
সস্থকবাদুনলঃ॥ বস্থুকবিঃগুকাঃগাক বিদ্রুমাগক্ষকাবঃনঃ॥ জবাযুস্থদ্রমযাহ্রা সাদিস্থযাদিবগ্রহ
হ্যামালযস্থাবেলা গাবি বন্ধনাগুরুগস্থবানাকস্থুবকুঙ্কুমাশাদী বিযাস্কুনাস্থিযত্রবঃ॥ মৃদঙ্গবগুবী

ঘাদি ঘাষহেথাদিনিস্বকঃসমনাস্থাদিনির্ঘোষঃ সর্ব্বসস্থসম্বত্রদঃ॥ধ্বজাক্রমীনর্গবাসি শ্রীবৎসস্বস্তি
কাস্তাকিঃত্রিশূলবামবঙ্কুর্ত্ত গজাশ্বরজসন্নিভঃ॥কলশাদক্ষিণাবর্ত্ত নকাষিণ্যমদার্থদঃ॥ ০ ॥বর্ণাঃ
নিমিত্তিয় কুশুমত্রয়বল্যবাঃ॥ত্রিত্রিমাহিমুখীজালা ত্রমক্ষিবদমুসলা॥বিস্ফাসমস্কুলিগাব নানাদুঃখে ৬৩
বুধগাবীহয়ঃ প্রকাষিবাবক্রিঃ স্যুর্ত্তাদিমাদিনীবুনঃ॥হুমীহয়াত্রমস্যেব সর্ব্বাত্র কার্যকারঃ
শিখাবিস্ফুরমানাস্থি নিস্কজালালিলানঃ॥আবাস্যস্য কবূর্ন লাতমৃত্যুপ্রদানলঃ॥বলাত্তাকিল

নীলাংগ বুদ্ধঃ শ্যামাংগিকা বুদ্ধঃ বিবর্ত্তে ধূম্রসংকাশঃ কৃষ্ণিকার্থনিবদনঃ॥ বাণ্ডাবাণ্ডঃ মাবাত্ত কাব গীবগন্ধন
দুর্গন্ধঃ স্বাদগন্ধীয়া যদি বাতাদ্বিনাগন্ধ্যা সিসমিসাযমানাপি এবে ঠক্কসম্ভবঃ মঘনাবাণিগন্ধীবন
ঃসম্বার্থিনাগন্ধ্যা সোগীর্ঘ মূলসম্যক্ ডল্লবমাপ্ত সাদ্রিঃ যাসী হীনিকাবজিঃ গন্ধ কাত্যমাদিগন্ধ॥
বীবসিঃ সাধু কলস্তবাগদাবজ্ঞ ধূক দল্লাসক মৃগাদ্রিঃ সবিমলাঃ যাসী এবা যাসুবাগ্য মূলাবব যস্থ
যাবিম্বিবঘ্রিসুসংকাশযন্ত সংস্তাব কাবিত্ত বদিনকর্ণসিমিত্তিকা কীগালঃ॥ সর্ব্বত্র সুখগন্ধ দ্রবিগিব

सिद्धयुक्तीरुक्तशास्त्रादिकं दग्धं ज्वालायां घृतं नवधा समिद्धं सौविकं सर्वं प्रशस्तायादीयते घृतं नष्टं नैव यादि नम
यत्र पूर्वं नष्टं कृष्टं वमनं नष्टारुं मिष्टं कृतं विवर्द्धी सिद्धं गिलं यायायं दशाकिंचित् सिद्धार्थं बलं पुष्टिं वृद्धिं कृत्वा
पूर्वमाषमुद्गं यदष्टाकुष्ठं यदि विवर्द्धनं सकलं संयोगं मध्यं कं साधुमध्यं निशागदं सकलं प्राविल्लं कलं वा
थं कृत्वा कजावृद्धिं कवीसमिसं घृतं यं प्रस्त्रे यदं सीध्वं दं सीतायां कुलं प्रदं शालिलं कुष्ठं दियुथा कुमीदी
यादीं दिविवर्द्धनादधिकुजा वायिसीतायं दं दुर्वायुं बलं वृद्धं x थं x नीसकलं संयं कवं वाकं कं गाम्बूलं

মনদমুবন্দনগর্ণলক্ষীত্রদগাণ্ডর্ণ, স্বস্তুসিদ্ধিঘমাত্রদাঘনিলমুবাত্রৈলাক্ষসবীযনঃসুক্ষিজসজবাবি
যতিবাবিজাদগ্রাস্কুরাসাযসা যস্বামিগ্রিবিবন্ধনীসবগণীঃর্ষ্ঠাবিদাদবনাঃ।বর্ষঃত্রকবাদিবুদ্ধবি
ময়সন্ধাথমিদ্ধিত্রর্দ্ধবাধিযাদিমদাঠযাবিগমনর্দ্ধামসমদাসীত্রদীত্রস্কন্দাদিকিবীনবাজিনযদসিদ্ধ
মনসস্কিগাস্নাকানাসঠিবাস্কিনাথকলদাদবঃসমসযর্ণালম্বাযদগাথযুবামুনীন্দ্রদবাদিদবনব
দবদবঃাবহাবযুজীবিধিবাদ্বিধিস্ত্র স্তুনযদস্তুনবিদাস্বাবিস্কঃ।।যুগ্মঃসীবহসকুলেগ্রাগিহবলেগন্ধ

ঽগিবঃস্বাক্ষক, মূর্খত্রোগাবিনাদিকীর্ত্তবলায়কীঽপ্রবীযঃযুবঃনৈবঘৈবসবস্থুগশ্বকালিকৈ দেস্কুঘযাঘৈঃ
যদ বক্রাবাবাবমনৈঃসুগম্বিঙালিলৈঃগাযহ্নবিস্মাকঃ॥ • ॥দাঘাবিহাগুরুথসুযুবিগাদন বলবঃ
নাকাস্ববযন্নবাস্বিকামোযামিবসুযাবিস্কলাস্তুক নদুক্তিগবাগানিঃসমদাবলিঃবিগুস্কমীস্যাননমক্ষমা
লিনযবযবদাস্বিগসাধনঘনাদনাবিবিত্রাহবত্রাঃসুহাহনদেবাসবানাযবিস্তুহবাদন॥ কাঃসুশীলা
হবত্রীবুযনস্তুবিহ্যাবিবিস্বঃস্কবিস্বাদবাগিদবাজিনদবসুকা নিবাঘসীদস্থুগস্কিবাসী॥ এবস্কর্ণ

শ্রীভগবান্ উবাচ নরেন্দ্র বাসবাদি যুদ্ধপূজা। গাস্থনবা স্থায়কাদ্যত্রনর্ত্ত দুষ্ট নৃলাবাঁজিনস্তাবয়ন্তী॥ জদর্ম্মবাঃ
জাথসদ্যস্থীমান্ সঁদর্ম্মযল্লামজনিগমানীদেবাসুবাগামিগিসত্রধর্ম্ম বিলাঙ্কত্বাজিনমস্থগঞ্চ॥ যঃধর্ম্ম
স্থাবয়ন্তিনমমনুহবশাক্রমাসঁত্রবর্ণ সর্ব্বযাযঁক্রয়কঃসকবস্তুগৃহঁসম্বন্ধ কিঞ্চ দুষ্টঁ শোস্থাবয়ীন
সত্যাসুবগণসদিষ্ঠনীযকসকবুদ্ধিঃ নানামাগ্নিস্থাবস্যসকবসুবগণ্ডীঃস্থাযিবামাস্যকমঃ॥ ॥ভূমি
শ্রীসুগমাবদানবাস্যাদিদ্বজনযজ্ঞ নয়নযবিবর্ত্তনামনবমঃ॥ ॥শ্রীকমমথমত্রযাদমিকাদ্রিয

सकलसः। भगवन्तं वर्द्धमानस्वामिजगद्गुरुं गौतमः। भगवन्तं मिथ्यामि जिनप्रियस्य पूजनीयानकमपूर्वकं
कीदृशं कथं भगवानी। कीदृशं यथा यथा वस्तूनि फलमूलानि क्रियन्तः। कथं कथमामिर्दत्तं हे बलभद्रादिभिः यथा।
एवमुक्तं जगद्गुरुणा मित्रयं युगमागवा। भगवा सकलभावावभासकाः सर्वदर्शिनः। भूतभविष्यद्वर्तमानं (६६
भोक्तारो सर्वसत्वानां सर्वयाथ्यप्रदर्शकाः। ।सर्वज्ञाः सर्वविद्याः धर्मभर्तृयवस्तुनाः। नृपनरपूर्णामार्ग
नानाबन्धप्रकारा। तीर्थंकरसमाधाय, लाभाः कथनकं कथा। जलधारादिवर्षाला, सर्वस्तुनादिगमयन्ता।

স্থলাবাস্যানিবাস্যক্ত যদাকাস্যস্তবামলাসাসুগন্ধধূপিকীবৈব প্রবক্তিগন্ধকাবস্যস্য ॥ ০ ॥ অথ প্রযুক্তাক্ত
সর্বনৃপতয়ঃ পুষ্পাদিনাগন্ধসুধূপদীপঃ নিবেদ্য যক্ষায়ুধবাবযক্ষ প্রপূজয়ামাসসুগন্ধাসমিধাদ্যা গ
লাদিমাবাত্রকুকমণ্ডলানি সাবয়লাগাক্তগমসমক্তগঠসুধীবাসাযবিযুক্তাকস্তুপ্রবিপ্রবিপ্রয
তথাগবাযথানানাপুথিবিষ্টজাতি যম্রকুমুদবাস্যকঠাসাবাবযাবিজাবিস্তু জলজস্থলজস্তথাসর্ব
যাসুগন্ধাবুদ্ধান্ত দিব্যপুথিবিষ্টবলিঠাপুবিকস্তমনাবস্য ক্ষুদ্রপুষ্পানবস্তুঠানানা কলস্বযকবিস্য

বস্ত্রাদিকৃতাসাস্তথাজুয়ানিফলমূলানি সুগন্ধ্যাযথাকনীনানাবিধবিধিজাণি বস্ত্রাণিবিবিধানিবা
সাদিগাসীবনীলাদি যক্ষবস্তুনিনানিবাযুক্তানিমণিবিজাণি কামাযানিপ্রদুষ্টবাসুমাযেগঘসংযুক্তা
ঃ গ্রন্থযাসুগন্ধাগ্রাণানানাবস্তুমযানিকুণ্ডলযুক্তাস্ত্রযামবাহুষ্কান বলিষ্ঠিজাবিষ্টিতঃসযাবিবৃত্তা
স্ত্রীযুবসুমীযুবাসজুর্যবাযবাবিবাসমণিমযাবৈলাকুলাস্তাতিকান যক্ষস্তুনসযানিদেসমকুতানর্কাযা
বাযুক্তীস্ত্রিবাযাযুসাদিগঘসংযুক্তান কাম্বুবসুযস্তাক্ষকঃ কগবস্যগ্রসংযুক্ত শুদ্রবৃষ্টাসদীধনঃসমু

৬৭

যালামদাহযা লাকযালামদাহযথাবদ্ধিগাস্বর্গ্বর্যাবা গ্রহনক্ষত্রবাদিবা কত্রাদ্ধিপগখকাখ দগা
রুমিত্রকাম্বিকাদেবাসবমনুষ্যাদীন যথাকামঙ্গিষ্ঠিগাদেবানাসমবাযক্ষা বিপ্রবাগ্নসদাবসাঠাগ
স্বর্গাসবতাস্থিব দেবকযাবিসংযুগাথাবিযাধবাহুসবাসবান কযাদিযবিরুষিগাসর্বযাদ্ধিগাগাগ্ন
যা দক্ষকাহাযবিষ্ঠিগাথাজুগাদেবকাসর্ব কত্রকত্রমনীবসাগস্বর্গাগ্নগাসর্ব বাযক্ষনতেনাযি
বাকত্রিযযুগাসমযা দ্বিকাযদগাসববাযত্রযুবনিসিলোনি লাগ্নযাগিত্রকাগিকাথাকাসিস্কনমনা

বস্য বক্তৃবৃষ্টিকথাদিবাগমকৌহায়ত্তুত্রক্ষ যীনবক্তাবিযাধবী॥ ১ ॥শ্রীবর্ণবুষ্টুবীজিগ সর্ব্ববুষা
শুভাবহনামাবযাবিজাগক্ষ দেবকযামহাহনা॥ ২ ॥নানারূপ্যমূদগ্রাদি সুবুগাদুদুহিস্ববাবীঘাব
গামুকুন্তথ গর্ব্বাবরদ্বিধা॥ ২ ॥লাঞ্চকানসবরাবিনীনা সুবর্ণবাঙ্গিবাদিদ্রসঙ্গিসিনস্ববাবব ৬৫
হাবমকাকাঃ হশীদবাযসবাবিকাকী॥ ৪ ॥সক্ষমুত্রাগবাকযা কাদম্বিযাবস্কন্ধকা বজ্রযাবাবসাসত্রাব
নস্তাহিবদ্ধকাঃ॥নানাস্ত্রমযযুক্ত মুক্তিবিভূযাদিবকাসবকত্যেবাদক্ষ সাগিক্ষাদিবদ্ধকাঃ॥ ৬ ॥স্ববা

বম্বরগীসাম্বি ঘঘিকাবমযন্বকান ঘৃগীযসাগবাবলী ওমসাবাহিগক্রযন্ব ॥ ৬ ॥ বিযাধ্বাবধূকযা মৃগ
কুম্ভযুবিগীমুদ্রি মূলাগিনাযব দবীযা যত্তগম্ববা ॥ ৭ ॥ মুক্তমণীগমধুবসুগন্ধি বাযমদন্তুকসুগী
গুকাবীকুন্দদুবঙ্গুলঘুসযগন্ধা মাধবাগমহাজিকসুবন্ধী ॥ ৮ ॥ প্রযকযুক্তবিখ্যাত নানাযুগ্মযকা
নিকাসদসযত্রযসানি হসযকপ্রহুল্লিকা ॥ বণ্ডমাগিক্ষসংযুক্তা কগলদিবসংযুতা যথাগিযকবৈবানি
নবপুষ্পনিমিত্তকী ॥ ৯ ॥ পৃথিযাঙ্গগাদবী নানাবন্ধসযুবিগীসুবগুঘটসাদায যুবস্কগাগথাদর্শ ॥

॥ ॥ नानावाजयानागजवाजयूथः यान्त्यैस्त्रिभिः सर्वविधैः तदिवमोक्षायवस्यवर्यस्तु यस्तिवस्तिनवादश
युधनिमित्तमवी ॥ ॥ जलस्थलकेशुलीकया दिव्ययानानि धाय्यवैः मुगकयक्षसमंधयः क्रियक्रगगमावयि
॥ दिव्यार्महाहिमाकया नानाहेवघरूपिणी ॥ वादहोकानिमित्तानि वरवाजिनदत्तना ॥ १२ ॥ श्रीहर्षदेवमि
त्रयमुगमानिहावकः यत्नयस्तुचाचि दुःखनयवमायुयाग्रुयविमिकमवमंधदेवकया क्रियकः
जिनवरमुकतुल्य युद्धमानानुयायिः मानिमयन्तु रागदनिष्टकिस्तुहाह यथनिधवनिवाविग्रवयस्तु

ধর্ম্মী ॥ ॥শ্রীশ্রীমহাগাবরানপূজনজনযুদ্ধনিমিত্তযবিবর্ত্তীনামদশমঃ॥ ৩ ॥মৈত্রযজ্ঞবারাত্রত
বীজিনসংঘানাং ভগবন্তং রামযাযিবাগবর্ত্তোত্তমিচ্ছামি ভগবন্ত্রহ্মদাদ্যয়া॥ রাজনবরার্থবাসা বাহুল
বকার্থহবস্যাসর্ব্ববিধিপূজন সংগরবহুমর্দ্দমি॥ অথাব্রবীন্মৈত্রেয় ভগবান্ বরসাথবিশাঠ্যসুব
মৈত্রেয় বিধিসর্ব্বলকথা॥ ॥দ্বিবাদনস্যাজনমুত্তমক্ষ্ণ ত্রিবাদুযুক্তাষ্টমুখক্ষনক্ষা যাযুষ্ব
যাজিনসাধিকানাং সাযাক্ষত্রিনিবাদুখসক্ষা॥ ভাক্ষাসংত্রযেকবসক্ষকানি যথক্ষৈবকলযিবাদ

স্নানিজুহীদিবস্বাবমুখ্যঞ্চনানি বর্ণাজিনানীবিযত্তকাবকাশ্চ্ছকিথমাস্থাদুগ্ধবাদিস্ নানাপ্রকা-
ষ্ঠবিস্তুর্কংযুক্তীঃযক্ষস্তবাস্বাবিজিনস্ত্রিযক্ত্ত্বকানিযানাদিবনকস্বাদুঃ॥ • ॥ঃ॥ঃ॥ঃ

[illegible]

যুগীবাজদক্ষাঙ্গুলীবাত্ত লাবঙ্গমুখবঙ্গিকা। পূর্ব্বব সদ্ধবুদ্ধাবীন্ কাবযন্ত্রবঙ্গিগা॥ জুসুবাবাক
মাস্থিব কাকবুযনবাগকাকেনবি লোনবুযগ ঠাযঠাঙ্গুরুঙ্গকা॥ ভগবানাদ্ধা সাধুসাধুমঙ্গবাগ
ন যদুর্ক্কাকলত্রাথকাজুত্রমযকলযর্ম্ম বঙ্গদঙ্গল্যকঠকিল॥ ॥যাঠা॥ দবঙ্গিযাবীসুগবযমঘ ৭৭
ঙ সুষ্ঠাকলেস্থসুগন্ধিযাযাঙ্গমনাস্থবজ্ঞাঠসুমনাস্থলাবনা তবঙ্গিযকসুবিগালসম্যদঠ॥ ॥জুযা
বমনাযক্ষাসৃকঠকুণ্ডসুগন্ধিকাযঁ বন্নাকবিযঠত্রদবাকিসংঘাসাংঘাদিবানসুবসিদ্ধিবন্দ সিদ্ধাব

নর্মলহরমুনীন্দ্র॥ ॥শ্রীকৃষ্ণ॥ দিব্যস্ত্রীযীনতুর্জীস্তনজঘনঘনাঘাতবিক্ষাহিমায়াং স্কন্ধজীবুনবা
স্কন্ধযুগমুরাহিবসাজীবগম্বক্ষিযস্যামি বাবিস্যাসুবীঘাঃত্বমিবিনমুদবক্রীতযাযত্রমক্ষ নানাগন্ধ
বকনমযকহলমিদবস্ত্রহঘবকাস্য॥ ॥জ্ঞানমাযস্থকবিস্কবসুমাহ্য হলিবাসু সীমক্ষিনীঘ
নযযামবযাতিবাক্ষাঃসংহাবকক্ষিবিহুজানিগিযিঃত্বদঠ দিযাসনসমিগবাম সংগোতমায॥ ॥
ত্রমস্যাযস্ত্রজবলীক্ষিবিত্বধানা কবাঙ্গলিকুন্তলবাবুগন্তুঃহস্কাসুসুগ্রীবহবদগ বুদ্ধয

नामाकथयामि कथ्रः॥ ॥मंडलाद्यत्राभ्रवक्तिमद : सेवकनाधिपर्यं दीर्घायुर्भाविविधरागरुपेर्विमुक्त
श्रवुद्धस्य कंठवनयपूजिगम्य कलारुवक्तिकसमेतसदमंडलानि॥विनस्मि मार्त्रकवाणिमंडलं सु
यिष्टवासेजिनसंघमंडलावर्जानुथाय मणिमौक्तिकाविकाविघ्नरुद्रुरुवमियशार्द्ध॥ ॥लोकाक १२
कामावाकीर्थकथःवेलुपुष्पलाजकासमकरुत्रार्य गंधाद्यरागकथःजीतक्तिमयसुवनाथसंघकोः सा
ईसुरागमःसुवसंघवंदकोः॥ ॥धूप॥नीलायलप्रवयंतुल्यशावीरगन्धा विद्याकीर्तिविमलायक

[illegible]

वर्दिमलयजमुरुचि अग्रहीकियुगायां गंगायामङ्गीचीयवमसनुरुव भावकसुरुवीति कंह्यागालीपु
साधिरुघमाणिनिमयःवृद्धसंघायरुह्या॥ ॥सुवर्णुतिलका॥संघसुवर्णुतिलकंसुविरसुरुह्यादवर्दि
विधिवलवलयसनुष्याःसिंहासनपुरवविप्रगहीरवद्धसंठाकिवुद्धवयुधाःसुवासिद्धिवद्धा॥ ॥वस्त्र १२
॥गम्बुधासुरुकिन्नरैःसदरवादवीयमानानना विद्युत्तालंधारुकुंसदुंधःकाकाविवालिंगिकाः स्व
सयद्विवरुकिविकवयुधालीलायमानाःसुवाः गद्दलायंगायंतीगमनयक्षुत्तालिकांधर्वया॥ ॥

যস্যাঃ গজাধিকাঃ প্রবরশুণ্ডসমন্বিতাপি যস্যাঃ পুনঃ কামিবযথাবরকীর্তিযুক্তাঃ গত্বা বিজিত্য বরমাসন
কিংবদন্তি সংঘস্য যস্য কুসুমৈঃ প্রকীর্ণকিং যুগান্ত॥ ॥সুগন্ধলয়নাবিহ্যসুকামগিরিমিবাজাঃ কীর্ণব
ক্ষোহগসংঘকায়াঃ নখাতমাঃ সঘজনযুথকাঃ হবন্তি সংঘস্য বসিযুবানাঃ॥ ॥সিংহাঃ বাগাদিভি
প্রবরদুঃখবেকবিমুক্তাঃ স্বিশ্রমনাঃ কনকতুল্যমনাঃ প্রবন্তঃ বাহ্যেন্দ্রিয়বিগতকণ্ঠকমাপ্রবন্তি তে
মহাদানবিধিনাবদুঃখান্তি সংঘ॥ ॥নিবস্যানিবস্যযসুগন্ধিতিভুবনমাদিগ্রীঘনস্যাস্যসংঘসংঘ

স্কন্দিক্ষিণীতোস্মৈগিকনকচর্ব্বৈব্দয়ক্ষাঙ্খিয়ম্মাঃগকস্তুতবরবিশ্বঃকুবলয়নয়নাসময়ক্ষাচবক্ষিঃ
বিষ্ণুজালাগ্রহাসঃত্রবলন্তুহ্যবাঃশ্রীঘনত্রায়যক্ষ॥ ॥বিমানাদি॥বিমানমঙ্খিন্নিমানাদিসংঘ্রিলা
কনাথাসুরাসিদ্ধিবন্দঃযাবীদদেবাঃসুবিগ্নাবর্ব্বত্রাসধর্ম্মদদাক্ষদিয়ত্রজগাম॥ ॥স্কন্দ॥গজত্ত্ব ৭৪
গযদানিয়ন্দনঃসকবলঃত্রজগিঙ্গমসদ্রঃথাম্নিবন্ধজবলীঃগগমবযবিবগাস্কন্দবুদ্ধাক্ষযাদ
স্কবাযিস্কলসুবর্ব্বস্কবানাত্বসুখী॥ ॥দক্ষযা॥নিয়ত্যানিসুবঙ্গিগাঙ্গাকগুণাযাযসদস্রনবত্রী

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

ऋतमुवाच ॥ संघविषयं यस्मान्नवानाकुलं ॥ ॥ यानानि यत्यानि वर्षुगमुत्रदमिगुणयुर्कालियं दृष्टिनाभि
त्रुम्भयोगाद्यवाकत्रुगमनवस्तुविषयलीवेन्तुवृष्टुयीश्रुत्रालयतिर्मगाधिकवसहोराजनसंस्थिर्य
दत्वासंघतरुस्थानवस्तुवनगमादियमाप्राणियानी ॥ ॥ नानाविधवाद्यनृत्यासूर्यसंवीणायष्टादिरिथः १७
कुर्वन्तियुगीसुगाठमानीमनुष्यरूपाःसुमनाश्चवाक्याः शृण्वन्तिगाद्यानसुमनाश्चरूपाश्च ॥ ॥ ॥ ॥
योवाग्रयाचित्रमुयानदायः सर्वपुरंघपुदिगाम्भिरुस्थाः योनाठमेकसुविरंत्रयाम्भि दवपुमस्थेषुसदाय

यन्त्रा॥ ॥कास्वरादि॥ हरिगन्धवादिकिंगिरानखत्रा दीर्घायुषादीर्घविशालदन्ता रुवक्तिकास्थूलगर्भएव
नाम संयाकमाविष्कविरुषिकाशा॥ ॥श्रीदुर्गाकलकीराजने संघबुद्धाश्रवानगठास्वल्यगठकलेवक्षमि
सर्वकामरुविष्यसि॥ गवाकस्यवबाकण्डु क्षुद्रपृष्ठामलाकरुठानीलाठाकारयस्यबीज वदयथनिगाक्षी॥
रुगवानुवाच॥ मित्रय ब्रह्मवर्गिनसंघानां त्रिलाकवस्थितामरुगमित्रयरुगपूर्वस्मिन मयाकरुवादाकिलठ
॥सकलगुणसमृद्दिद्यदरुद्रयपूर्व रुवक्तिवविसमासंनत्रयमदवकामुखगगसमसमृद्धामानयित्वाप्रय

নিমগ্নিমযকমলবন্ধাবযাঘঃসুধর্ম্মা ॥ ॥ শ্রীশ্রীসুগমাবরনগরজনাদিকলকযবিবর্ত্তীনামিকা
বস্থামস্থা ৩ ॥ ভগবানুবাবাজুথঘবীমদাবাজন কমীবর্ত্তজিনস্তহঁ জমস্তীমদাবুদ্ধ সর্ব্বসুজি
ত্রদঘবকঃ ॥ মবিহীমমদানাথ নধনসর্ব্ববিস্তুনি কলমদামবিমুক্তা নযথমুক্তিধারকা ॥ শ্রীকমাযমি
লাগ্রগ্রামবরকার্ত্তবিহামবর্ত্তমালম্বঃ ॥ উনমঃসকবুদ্ধযঃ ॥ ডযন্নাবস্থমযীন্যযিবরকুলযাবিয
স্থাবিনাম্না যস্যাঃ ॥ শ্রীমদ্গ্রামমবনবস্তুবাবাযুবাসীজনানাথমাবাবজিনস্তদগবলবলিনাযাত

लाङ्गमूलं विवक्षुर्नवाङ्गिरसामिकं सकलक्लेशवह्निजिनेन्द्रा ॥ १ ॥ वंशाद्यूषीन्द्र वाग्मीमदनियुवर्ष
यस्त्वजाताद्वुगाङ्गं वर्षगामायुवासीत्सकलगुणनिस्त्र्यंयसकायुगानिर्मिताकायनवाधिष्ठवदिग्य
दुनायुण्डरीकस्यमूलं विवक्षुर्नवाङ्गिरसानीनमृषिवरंप्रादर्शसारयावी ॥ २ ॥ यो जगानायमायोऽवि
गकयशसामन्वयोऽथिवानामायुषष्ठिसहस्राग्रहयदवमर्यस्यसम्वसवाग्गाजिलाङ्गगानहाया
नमृतमधिगर्यनगालस्यमूलं विवक्षुर्धर्मराजं भुवनहितकरविष्वक्सेनाभ्रयस्या ॥ २ ॥ क्रमावर्ष्मा

ভ্রজাকামনুজযদিসমযাবঠীবিপ্রবঠাসাযুর্ব্বর্ষযুকানিপ্রববস্তুগানিম্বর্য্যযযাবাসীব্রবঘাজিনর্ত্তয
নলব্রজিহবববধকবঞ্জনবেঙ্গঠগিবীম্ব বন্দবঁসিদ্ধিকার্য্যযুগমনুসর্ব্বজকুরু দ্বমুনীন্দ্রা ৫ ॥ ঠাহ
বর্য্যাদ্বিজানাম্নবযদিনিদিকযাস্বযসংযুকা যযাযুনাসদ্রাগ্যাদিঠাযবযযস্ত্রিঠাবাযুর্ব্বহুবাবু ৭৭
জ্বর্ব্বযনববাবলববস্তুগিনাদুস্বরত্রাকমগ্রাঁ রবিবন্দ্রাসিগাবকনকমুনিসুবিঘ্নস্তাদাস্বকাবাঁ ৩ ॥
বাবাগস্যাঁসমীঠাঠঠাজিকিযদিসদিকবিপ্রবঠাহিজাকা যযাস্বাযুসদ্রাগ্যাদিঠাযনিদ্রাবিঠাকীবসব

[illegible]
॥ ৬ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

বযুবাবস্থিকীর্ত্তিমুনীন্দ্রঃ॥ ৫ ॥স্তুতাবিসকদ্বুদ্ধ-সকলসুযগনাসকসকাঙ্কাশাসীত্রযীবাহুসংভ
ত্তমিতযুবগর্ত্তাবিকলাকনাথ।যত্যুগ্মসস্যসুর্দ্ধুতগাবিহুলদ্বিদিনামবসুঃ স্তিবাসক্রগযা
গ্নমনযঞ্চবাবিনিষ্ঠুর্বিসস্যযান্তু॥ ৬ ॥বাগাবাবা।সুযমসহুলংজাবি সুযকামসনাবথাসহু ৭৫
ত্যবুদ্ধযাসাদঁ সুসাকমসমাবর্ত্তা।শুযুকাংস্কাযবাজন সুগাগাবসুবাত্তবীযবাগসম্বহুলস্বঃ
বত্তবসহুলাস্বিকঃ।সুধীবাকতমধ্যাঙ্গ কল্যানসম্বদাখিলঃ।সর্ব্বসংযত্রবানাস্থ.গস্যাবসুবাব

ঁ॥ ॐ যেকাবৈমদাবঘ্রাঃ সর্ব্বকর্ত্তৃত্বমঙ্গনাঃ মদবুদ্ধ্যা হীনাঃ ডক্কল্লমনসাগথা॥ কবাবাজাসমুক্তঃ
যমত্রিঃ মদিনক্ষথা যাবন্নদিন্নিগন্তুং সঘানাযুক্তাযথা॥ বাজীবাবা হগবন্তনাথ রবিবজ্র
লিকাত্রহাক্ষমলহ্যমদাহিঙ্গ গঙ্গমিসমমাণ্ডিলা॥ ॐ যেকাত্রযোগবা॥ ॥ জুথবাজাসুযহীমা
মাস্ত্রীযাবজনাম্বিগাবসুবন্ধুপুরস্তুয বহাযযবাঁহু হাঁবসুবন্ধুবাবা॥ নবঙ্কসঘকর্ম্মাণি বা
গর্ম্মযুক্তমবাসসঘব কাযবাজন যদুর্ক্কহলমুক্তবা॥ পুনর্থমদাবাজনা॥ সমাস্ত্রিগবাসুযু গ

মহামাদিবর্জিতং হাবাধিমলং হবিষ্যন্তি বরং হবিকাক্ষথা। রাজাবাবা। হগবং সর্ব্বকালং হ্রং যথাব
ত্রসাদগঠাকর্ম্মমনোস্থিরমর্থং হ্রেয়ানাত্মথং হ্রসগাবসবম্বরবাবা। রাজন্ত্রিষ্ঠমদাত্রাস্তি গচ্ছঃ
মিসমসন্তিরাজগলৈস্তাবাদিনাথয় হ্রপুষ্টিতকর্ম্মবা। রাজাবাবা। মাগামর্ত্তাথি নামর্ত্ত যাস্যামি ৭৮
যাদিগাবনাগবাহ্রঙ্গলয়নিগচ্ছামি মমরাজ্যাগচ্ছথিবাব মুবম্বরবাবা। হ্রবুদ্ধত্রমদাবাগচ্ছ
ওনাস্তিমদাবলাযক্ষাস্তিহ্রযদ্ভ্রবা মতস্তিহ্রস্থবরা। হ্রযমর্ত্তজনঃমার্গং সদাবামস্তিহিঃ

ক্ষত্রিয়বংশকবুদ্ধানা গমিষ্যথ মহাবলী॥ শ্রুত্বা কাক্ষদৃষ্টী॥ ॥সুখবাজামহাবাহুঃ সর্ব্বযীবজ
নঃ মহাজসাযগ্রগ্রমবীহুঁ, বুরগন্ধবর্ণাববৃত্তা নানাবাযসৃবর্ণাঢ্যঃ কাকবিধ্বযসর্ব্বস্থঃ বরক্ত
যাঙ্গ্যমাবস্ক গন্ধবর্ব্বনিচিতঃ স্বনেঃ॥ মহাগন্ধবর্ণবাসী বাক্ষ্ণবাজোনিজগ্যবঃ। ক্রমাদিবাসিনঃসর্ব্ব
স্তাগস্তিমুদ্রমনা॥ মহাযীবজনাসর্ব্ব রাজানস্তমহাবলঃ জুনস্যনীযকপুর্য্যাং নানা সবসমাকুল
॥ক্রমাদবমহাবাজা ধর্ম্মমঙ্গলিকীনৃপঃ দেসবযুদ্ধবিশ্বাত্ত, ত্রবিবঙ্গমহাযুবী॥ ॥সুখবাকপু

বীত্রাথ সাক্ষাদনপ্রতিষ্ঠা সাক্ষিহিত্থ্য বিবৃত্য রাজাধীরজনাবিকঃ॥ গদনক্ষা॥ স্বমুখিবাসন
স্তথ রাজ্ঞাহিমবাবাবথ গাবন্দ্রপ্রতমদাসর্বং বন্ধিবাসমুত্তমাবী॥ যমাদিসমাবারত্যঃ বিক
যামাসমসবাজানীয়ন্ত্রনর্কতক্ষ কাযজীববমবীয়॥ ইন্দ্রনক্ষত্রসবানন্দ একীকসববন্ধুঃ। ৫০
লক্ষ্মীসর্ববাক্ষরী সর্ববাক্ষবিসজ্জিতি॥ ॥জুনক্ষাসমবুদ্ধাথ বানিবাহ্যবিক্ষবাজাগস্ত্য
স্কন্দমাস্ত্র সবকাদিসদনৃত্য॥ সমস্তীথ্য গাবাবাজা সর্বীবন্ধসদাসমিঃ সদসাদিত্য যানেত্ত্ব

যাক্তিকর্ম্মবায়ুনা।।সুবাবাঁযবত্রাথ বাধিসবৈঃসমুদ্রকৈঃ।।সাবর্ণসাযকবাজা বিযত্রকদ্রস্তাযি
নাঃ।।ত্রমিত্রমিত্রমি

ক্ষা স্থানসংকুলাঃ কিং স্থাবরবনিশ্চয়া গাস্তস্তুল্যসমাবয়ঃ॥ অস্যাধিকামদাদতঃ সংঘশাস্ত্রবিকার
যদাদবানামাসুরাযস্তা বিন্নবাগ্রমদাবগাঃ॥ গন্ধর্বাগরুতাস্তৈব স্বস্বকর্তব্যযুগবাঃ॥ ॥
সিদ্ধাসমসমাগিমর্যসুরসিদ্ধিবন্দ যঃ শ্রাবয়তমসমসমদানুশাবঃ সংযুক্তিকাঃ সবসবাদিতবর্গ ৫৭
তুল্যঃ সাবস্থবাবিবিধবলবিরুষিকাঃ॥ ॥শ্রীকিন্নীসুগকাবদানসংঘশাস্ত্রতাসাযবিব
স্তেনামদ্বাদশমঃসমাপ্তঃ॥ ॥যথাস্মাকুত্তরাবা কুত্তকমা কথাগণা ঋবদতর্ষবিযানি

বাধ্রবিবাদিসহাগ্রসঘাঃ ৩ ॥